TAJIRON KE LIYE KAM KI BATEN

तिजारत और ताजिरों से मुतअ़ल्लिक़ इस्लामी मालूमात पर मुश्तमिल रिसाला

ताजिरों के लिए

काम की बातें

तिजारत और इस की अहम्मिय्यत	4
तिजारत में पाई जाने वाली उ़मूमी ख़राबियां और इन के नुक़्सानात	6
तिजारत की मुरव्वजा ना जाइज़ सूरतें	13
ताजिरों की दीनी ख़िदमात	22
ताजिर दीन की ख़िदमत कैसे कर सकता है ?	39
मजलिसे ताजिरान के 25 मदनी फूल	44

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पेहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिए اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रेहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिए ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़्यादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (यानी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइए ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दावते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह रिसाला मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दावते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब किया है। मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह ग़लती पाएं तो मजलिस को सफ़ह़ा और सत़र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए़ इत्तिलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइए।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं !!!

राबित़ा :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात (हिन्द)

+91 98987 32611

E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = یُ	ु = وُ	आ = آ	य = ی	ह = ه	व = و	न = ن

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

ताजिरों के लिए काम की बातें

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : जिसे कोई सख़्त हाजत दरपेश हो तो उसे चाहिए कि मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़े क्यूंकि येह मसाइबो आलाम को दूर करता और रिज़्क़ में इज़ाफ़ा करता है।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रज़्ज़ाक़ कौन ?

अल्लाह रब्बुल आलमीन जो तमाम मख़्लूक़ात का ख़ालिक़ो मालिक है वोही सब को खिलाता पिलाता है, वोह रज़्ज़ाक़ है, चुनान्चे, पारह 27, सूरतुज़्ज़ारियात की आयत नम्बर 58 में इरशाद होता है :

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ ﴿۵۸﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** ही बड़ा रिज़्क़ देने वाला क़ुव्वत वाला क़ुदरत वाला है।

तफ़्सीर सिरातुल जिनान में है : बेशक **अल्लाह** तआ़ला ही बड़ा रिज़्क़ देने वाला है, वोही हर किसी को रिज़्क़ देता है वोह क़ुव्वत वाला है इसी लिए मख़्लूक़ तक रिज़्क़ पहुंचाने में उसे किसी की मदद की ज़रूरत नहीं और रिज़्क़ पैदा करने पर क़ुदरत रखने वाला है, सब को वोही देता और सब को वोही पालता है।[2]

[1] .....بستان الواعظین، الصلاۃ تحل العقد، ص ۲۴۱

[2] .....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 27, अज़्ज़ारियात, तहतुल आयत : 58, 9 / 512

www.dawateislami.net

पारह 21 सूरतुल अ़न्कबूत की आयत नम्बर 60 में है :

وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۖ اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ ۚ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ज़मीन पर कितने ही चलने वाले हैं कि अपनी रोज़ी साथ नहीं रखते **अल्लाह** रोज़ी देता है उन्हें और तुम्हें।

इस आयत का शाने नुज़ूल येह है कि मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में ईमान वालों को मुश्रिकीन दिन रात त़रह़ त़रह़ की ईज़ाएं देते रहते थे। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से मदीनए त़य्यिबा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की त़रफ़ हिजरत करने को फ़रमाया तो उन में से बाज़ ने अ़र्ज़ की : हम मदीने शरीफ़ कैसे चले जाएं ? न वहां हमारा घर है न माल, वहां हमें कौन खिलाए और पिलाएगा ! इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इरशाद फ़रमाया गया कि बहुत से जानदार ऐसे हैं, जो अपनी रोज़ी साथ नहीं रखते और न ही वोह अगले दिन के लिए कोई ज़ख़ीरा जम्अ़ करते हैं जैसा कि चौपाए और परिन्दे, **अल्लाह** तआ़ला ही उन्हें और तुम्हें रोज़ी देता है, लिहाज़ा तुम जहां भी होगे वोही तुम्हें रोज़ी देगा[1] तो फिर येह क्यूं पूछ रहे हो कि हमें कौन खिलाए और पिलाएगा ? सारी मख़्लूक़ को रिज़्क़ देने वाला **अल्लाह** तआ़ला है, कमज़ोर और त़ाक़तवर, मुक़ीम और मुसाफ़िर सब को वोही रोज़ी देता है।[2]

एक और मक़ाम पर इरशादे ख़ुदावन्दी है :

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا (پ۱۲، هُوْد:٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ज़मीन पर चलने वाला कोई ऐसा नहीं जिस का रिज़्क़ **अल्लाह** के ज़िम्मए करम पर न हो।

[1] .....تفسیر خازن، پ۲۱، العنکبوت، تحت الآیۃ: ۶۰، ۳/۳۸۴

[2].....तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 21, अल अ़न्कबूत, तह़तुल आयत : 60, 7 / 400

www.dawateislami.net

अ़ल्लामा अह़मद सावी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस आयत से येह मुराद नहीं कि जानदारों को रिज़्क़ देना **अल्लाह** पाक पर वाजिब है क्यूंकि ख़ुदाए ज़ुल जलाल इस से पाक है कि उस पर कोई चीज़ वाजिब हो बल्कि इस से येह मुराद है कि जानदारों को रिज़्क़ देना और उन की कफ़ालत करना **अल्लाह** करीम ने अपने ज़िम्मए करम पर लाज़िम फ़रमा लिया है और (येह उस की रह़मत और उस का फ़ज़्ल है कि) वोह उस के ख़िलाफ़ नहीं फ़रमाता। रिज़्क़ की ज़िम्मेदारी लेने को "عَلٰی" के साथ इस लिए बयान फ़रमाया ताकि बन्दे का अपने रब्बे करीम पर तवक्कुल मज़बूत़ हो और अगर वोह (रिज़्क़ ह़ासिल करने के) अस्बाब इख़्तियार करे तो इन पर भरोसा न कर बैठे बल्कि **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त ही पर अपना एतिमाद और भरोसा रखे, अस्बाब सिर्फ़ इस लिए इख़्तियार करे कि **अल्लाह** पाक ने अस्बाब इख़्तियार करने का हुक्म दिया है क्यूंकि **अल्लाह** करीम फ़ारिग़ रहने वाले बन्दे को पसन्द नहीं फ़रमाता। ज़मीन के जानदारों का बतौ़रे ख़ास इस लिए ज़िक्र फ़रमाया कि येही ग़िज़ाओं के मोह़ताज हैं जब कि आस्मानी जानदार जैसे फ़िरिश्ते और ह़ूरे ऐ़न, येह उस रिज़्क़ के मोह़ताज नहीं बल्कि उन की ग़िज़ा तस्बीह़ो तहलील है।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इन आयाते मुबारका और इन की तफ़्सीर से येह बिल्कुल वाज़ेह़ है कि हर ज़ी रूह़ को रोज़ी देने वाली ज़ात सिर्फ़ और सिर्फ़ **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की है, मगर येह याद रहे उस ख़ालिक़ो मालिक ने उस रिज़्क़ तक पहुंचने के लिए बन्दे को अस्बाब इख़्तियार करने का हुक्म फ़रमाया है क्यूंकि हाथ पर हाथ धर कर फ़ुज़ूल बैठ रहने वाले उसे पसन्द नहीं। **अल्लाह** पाक तो ऐसे बन्दों को मह़बूब रखता है जो तलाशे रिज़्क़ में मेह़नत से काम लेते हैं। ह़दीसे पाक में है : اَلْكَاسِبُ حَبِيْبُ اللهِ यानी रोज़ी कमाने वाला **अल्लाह** करीम का मह़बूब है।[2]

[1] ..... تفسیر صاوی، پ۱۲، ھود، تحت الآیۃ: ۶، جز۳، ۲/۲۷ ملتقطًا

[2] ..... تفسیر روح المعانی، پ۲۰، القصص، تحت الآیۃ: ۷۳، ۲۰/۴۲۴

www.dawateislami.net

रिज़्क़ कमाने के बे शुमार ज़राएअ़ हो सकते हैं जिन में से अहम और नुमायां ज़रीआ़ तिजारत भी है।

तिजारत और इस की अहम्मिय्यत

कोई चीज़ इस लिए ख़रीदना ताकि उसे मनाफ़ेअ़ पर बेचा जाए **तिजारत** कहलाता है।[1] सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है, तिजारत करो ! कि रोज़ी के 10 हिस्से हैं नव[9] हिस्से फ़क़त तिजारत में हैं।[2] तिजारत की अहम्मिय्यत का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि इस पेशे को अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से बरकतें लेने का शरफ़ हासिल हुवा है, जैसा कि मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, हकीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना हूद عَلَيْهِ السَّلَام और ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام **तिजारत** फ़रमाया करते थे।[3] इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या के इ़लावा सरवरे काएनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी इसे अपनी ज़ाते बा बरकत से नवाज़ा है। मन्क़ूल है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तिजारत की ग़रज़ से मुल्के शाम व बसरा और यमन का सफ़र फ़रमाया और ऐसी रास्तबाज़ी और अमानत व दियानत के साथ तिजारती कारोबार किया कि आप के शुरकाए कार और तमाम अहले बाज़ार आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अमीन** के लक़ब से पुकारने लगे।[4]

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुज़ारबत[5] और शिराकत[6] दोनों

[1] ..... کتاب التعریفات، حرف ت، ص ۱۱۴

[2] ..... کیمیائے سعادت، رکن دوم، اصل سوم، باب اول در فضیلت و ثواب کسب، ص ۱۱۷

3.....इस्लामी ज़िन्दगी, स. 143 ब तसर्रुफ़

4.....सीरते मुस्त़फ़ा, स. 103

5.....**मुज़ारबत** एक ऐसा अ़क़्द है जिस में एक फ़रीक़ की त़रफ़ से रक़म और दूसरे की त़रफ़ से अ़मल होता है जब कि मनाफ़ेअ़ में दोनों शरीक होते हैं। (درمختار، کتاب المضاربة، ص ۵۴۵)

6.....**शिराकत** से मुराद ऐसा अ़क़्द है जिस के अन्दर अस्ल माल और नफ़्अ़ दोनों में शिर्कत पाई जाए। (درمختار، کتاب الشرکة، ص ۳۶۲)

www.dawateislami.net

त़रीक़ों से तिजारत को बरकतें लुटाईं, बत़ौरे मुज़ारबत ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के माल को मुल्के शाम में तशरीफ़ ले जा कर फ़रोख़्त किया[1] और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन साइब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ शिराकत (पार्टनरशिप Partnership) पर कारोबार फ़रमाया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ज़मानए जाहिलिय्यत में हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का शरीके तिजारत था, मैं जब मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुझे पहचानते हो ? मैं ने अ़र्ज़ किया : क्यूं नहीं ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तो मेरे बहुत अच्छे शरीके तिजारत थे न किसी बात को टालते और न किसी पर झगड़ा करते थे।[2]

बेहतरीन तिजारत

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर हम भी चाहते हैं कि हमारी तिजारत भी अच्छी हो, हमारी रास्तबाज़ी और दियानत दारी की मिसाल दी जाए, हमारी तिजारत से उम्मते मुस्लिमा को आसानी हो तो इस के लिए ज़रूरी है कि **इस्लामी उसूले तिजारत** सीख कर उन पर अ़मल किया जाए। दीने इस्लाम जिस त़रह़ इबादात मसलन नमाज़, रोज़ा, ह़ज और ज़कात की अदाएगी की तालीमो तरबियत देता है, इसी त़रह़ कारोबारी लेन देन और तिजारती मुआ़मलात की भी मुकम्मल रहनुमाई करता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, रसूले अन्वर, साहिबे कौसर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : तमाम कमाइयों में ज़ियादा पाकीज़ा उन ताजिरों की कमाई है कि जब

[1] ..... دلائل النبوۃ لابی نعیم، الفصل الحادی عشر، ذکر خروج النبی...الخ، ص۹۹ مفھومًا

[2] ..... خصائص کبری، ذکر المعجزات والخصائص، باب خصوصیتہ صلی اللہ علیہ وسلم...الخ، ۱/ ۱۵۳

www.dawateislami.net

वोह बात करें तो झूट न बोलें और जब उन के पास अमानत रखी जाए तो ख़ियानत न करें और जब वादा करें तो उस का ख़िलाफ़ न करें और जब किसी चीज़ को ख़रीदें तो उस की मज़म्मत (बुराई) न करें और जब अपनी चीज़ बेचें तो उस की तारीफ़ में ह़द से न बढ़ें और उन पर किसी का आता हो तो देने में ढील न डालें और जब उन का किसी पर आता हो तो सख़्ती न करें।[1]

तिजारत में पाई जाने वाली उ़मूमी ख़राबियां और इन के नुक़्सानात

झूट और झूटी क़सम

प्यारे इस्लामी भाइयो! तिजारत को वुस्अ़त और फ़रोग़ देने के लिए आज कल झूट का सहारा लेना बिल्कुल आ़म होता चला जा रहा है। गाहक को मुत़मइन करने की ख़ातिर बात बात पर झूटी क़समें खाई जाती हैं। مَعَاذَاللہ इस क़दर बे ह़िसी हो चुकी है कि इसे गुनाह भी ख़याल नहीं किया जाता बल्कि होशियारी और चालाकी समझते हुवे कारोबार की तरक़्क़ी में मुफ़ीद जाना जाता है। गाहक को अपने घेरे में लेने और मुत़मइन करने के लिए त़रह़ त़रह़ से झूट बोला जाता है। मसलन "अगर कोई ख़रीदार किसी चीज़ का दुकानदार की मत़लूबा क़ीमत से कम रेट लगाए तो दुकानदार फ़ौरन झूटी क़सम खा लेता है: **ख़ुदा की क़सम! येह चीज़ हम इतने पैसों से कम पर बेचते ही नहीं।**" इसी त़रह़ ज़ियादा मनाफ़ेअ़ में किसी गाहक से येह झूट कह दिया जाता है कि अभी एक गाहक इस चीज़ के आप से ज़ियादा पैसे दे रहा था मगर हम ने फिर भी इसे फ़रोख़्त नहीं की। ह़दीसे पाक में ऐसे झूटों के लिए बड़ी सख़्त वईद

[1] .....شعب الایمان، ۳۴-باب فی حفظ اللسان، ۴/۲۲۱، حدیث: ۴۸۵۴

www.dawateislami.net

आई है । चुनान्चे, **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : तीन शख़्स ऐसे हैं जिन से क़ियामत के दिन **अल्लाह** पाक न कलाम फ़रमाएगा और न ही उन की त़रफ़ नज़रे रह़मत फ़रमाएगा : (इन में से) एक वोह है जो किसी सामान पर क़सम खाए कि मुझे पहले इस से ज़ियादा क़ीमत मिल रही थी ह़ालांकि वोह झूटा हो ।[1]

याद रखिए ! झूट बोल कर माल वग़ैरा फ़रोख़्त करने से अगर्चे वक़्ती त़ौर पर नफ़्अ़ ह़ासिल हो जाता है मगर दर ह़क़ीक़त ऐसी कमाई और तिजारत से बरकत ख़त्म हो जाती है । रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ख़रीदने और बेचने वाले अगर सच बोलें और मुआ़मला वाज़ेह़ कर दें तो उन की ख़रीदो फ़रोख़्त में बरकत दी जाती है और अगर वोह दोनों कोई बात छुपा लें और झूट बोल दें तो उस से बरकत उठा ली जाती है ।[2] एक रिवायत में है : झूटी क़सम माल को बिकवाने वाली लेकिन कमाई की बरकत मिटाने वाली है ।[3]

मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस मफ़्हूम की ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : बरकत (मिट जाने) से मुराद आयिन्दा कारोबार बन्द हो जाना हो या किए हुवे ब्योपार (व्यापार) में घाटा (नुक़्सान) पड़ जाना यानी अगर तुम ने किसी को झूटी क़सम खा कर धोके से ख़राब माल दे दिया वोह एक बार तो धोका खा जाएगा मगर दोबारा न आएगा न किसी को आने देगा, या जो रक़म तुम ने उस से ह़ासिल कर ली उस में बरकत न होगी कि ह़राम में बे बरकती है ।[4]

[1] ..... بخاری، کتاب الشرب و المساقاۃ، باب من رای ان صاحب الحوض...الخ، ص۶۱۰، حدیث: ۲۳۶۹

[2] ..... بخاری، کتاب البیوع، باب البیعان بالخیار مالم یتفرقا، ص۵۵۰، حدیث: ۲۱۱۰

[3] ..... الترغیب و الترھیب، کتاب البیوع وغیرھا، ترغیب التجار فی الصدق...الخ، ص۵۹۸، حدیث: ۴

[4] .....मिरआतुल मनाजीह़, 4 / 244

www.dawateislami.net

धोकादेही

फ़ी ज़माना तिजारत में धोकादेही भी एक आ़म वबा है। ऐ़बदार और ख़राब अश्या को बड़ी चालाकी से लोगों को सोंप दिया जाता है। जाली और मिलावट शुदा चीज़ें अस्ली और ख़ालिस ज़ाहिर कर के बेच दी जाती हैं, ह़ालांकि ऐसा करना तिजारत के इस्लामी उसूलों के बिल्कुल ख़िलाफ़ है। शरई मस्अला है कि जब कोई सौदा बेचे तो वाजिब है कि उस में अगर कुछ ऐ़ब व ख़राबी हो तो ख़रीदार को बता दे, **ऐ़ब को छुपा कर और ख़रीदार को धोका दे कर बेचना ह़राम है।**[1] एक बार सरवरे काएनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ल्ले के एक ढेर के पास से गुज़रे, अपना दस्ते मुबारक उस ढेर में डाला तो उंगलियों पर कुछ तरी महसूस हुई। ग़ल्ले वाले से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : येह क्या है ? उस ने जवाब दिया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! इस ढेर पर बारिश हो गई थी, इरशाद फ़रमाया : फिर तुम ने भीगे हुवे ग़ल्ले को ऊपर क्यूं नहीं रख दिया कि लोग इसे देख लेते। **जो शख़्स धोका दे, वोह हम में से नहीं।**[2] मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस से मालूम हुवा तिजारती चीज़ में ऐ़ब पैदा करना भी जुर्म है और क़ुदरती त़ौर पर पैदाशुदा ऐ़ब को छुपाना भी जुर्म।[3]

हमारे मुआ़शरे में धोकादेही की कई सूरतें पाई जाती हैं। बाज़ सब्ज़ी व फल फ़रोश गाहक (Customer) खींचने के लिए अच्छी अच्छी

[1] ..... درمختار، کتاب البیوع، باب خیار العیب، ص ۴۱۲ ماخوذًا

[2] ..... مسلم، کتاب الایمان، باب قول النبی صلی اللہ علیہ وسلم: من غشنا فلیس منا، ص ۵۷، حدیث: ۱۰۲

[3].....मिरआतुल मनाजीह़, 4 / 273

www.dawateislami.net

और उ़म्दा सब्ज़ियां व फल ढेर के ऊपरी सत़ह़ पर रखते हैं, गली सड़ी और ख़राब नीचे रखते हैं। जब किसी गाहक से सौदा तै़ हो जाता है तो वज़्न करते वक़्त बड़ी चालाकी से सह़ीह़ व ख़राब दोनों त़रह़ की चीज़ें तोल कर शापर वग़ैरा में डाल देते हैं। इसी त़रह़ मोबाइल फ़ोन (Mobile Phone), कम्प्यूटर (Computer) और दीगर टेक्नोलोजी (Technology) की चीज़ों में सरीह़ ग़लत़ बयानी से काम लिया जाता है। मसलन मरम्मत (Repair) किए हुवे फ़ोन (Phone) को येह कह कर बेचना कि येह मरम्मत शुदा (Repaired) नहीं। पुराने कम्प्यूटर (Old Computer) और लेपटॉप (Laptop) को नया कह कर या उस का मेयार (Quality) बेहतर बता कर कम मेयारी (Low Quality) बेच देना। अच्छा सेम्पल (Good Sample) दिखा कर घटिया माल पेक (Pack) कर देना। याद रहे येह सब ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो किसी मोमिन को ज़रर पहुंचाए या उस के साथ मक्र और धोकेबाज़ी करे वोह मलऊ़न है।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! धोकादेही इन्तिहाई नुक़्सान देह है। धोकेबाज़ को कहीं भी इ़ज़्ज़त की निगाह से नहीं देखा जाता, ऐसे शख़्स से लोग अपने किसी भी क़िस्म के मुआ़मलात करने से कतराते हैं। मरवी है कि मक्रो फ़रेब जहन्नम में ले जाने वाले हैं।[2]

दग़ाबाज़ दाख़िले जन्नत न होगा।[3]

[1] .... ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی الخیانة و الغش، ص۴۷۵، حدیث:۱۹۴۱

[2] .... شعب الایمان، ۳۵-باب فی الامانات ومایجب من ادائھا...الخ، ۴/۳۲۴، حدیث:۵۲۶۸

[3] .... ترمذی، کتاب البر و الصلة، باب ماجاء فی البخل، ص۴۷۹، حدیث:۱۹۶۳

सूद

प्यारे इस्लामी भाइयो ! तिजारत में पाई जाने वाली बुराइयों में से सूद (Interest) ऐसी ख़बीस बुराई है जिस ने हमेशा मईशत (Economy) को तबाहो बरबाद ही किया है, क़ुरआनो हदीस में इस की मज़म्मत को इन्तिहाई शिद्दत से बयान किया गया है यहां तक कि सूदख़ोरों को **अल्लाह** पाक और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से एलाने जंग की वईद भी सुनाई गई है। इरशादे ख़ुदावन्दी है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰۤوا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۲۷۸﴾ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ (پ۳، البقرۃ: ۲۷۸تا۲۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो **अल्लाह** से डरो और छोड़ दो जो बाक़ी रह गया है सूद अगर मुसलमान हो फिर अगर ऐसा न करो तो यक़ीन कर लो **अल्लाह** और **अल्लाह** के रसूल से लड़ाई का।

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه रिवायत करते हैं कि सरकारे आ़ली वक़ार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : शबे मेराज मेरा गुज़र एक ऐसी क़ौम पर हुवा जिस के पेट घर की त़रह़ (बड़े बड़े) थे, उन पेटों में सांप मौजूद थे जो बाहर से दिखाई देते थे। मैं ने पूछा : ऐ जिब्राईल ! येह कौन लोग हैं ? कहा : **येह सूदख़ोर हैं।**[1]

बद क़िस्मती से हमारे मुआ़शरे में सूदी निज़ाम का रवाज बढ़ता जा रहा है। त़रह़ त़रह़ के ह़ीले बहानों से सूद लेने देने पर उक्साया जा रहा है। दीन से इस क़दर दूरी है कि जब भी कोई माली परेशानी होती है फ़ौरन सूद पर क़र्ज़ा लेने का ख़याल ज़ेह्न में आता है, अगर किसी से अपनी

[1] ..... ابن ماجه، کتاب التجارات، باب التغليظ فی الربا، ص۳۶۳، حدیث: ۲۲۷۳

www.dawateislami.net

परेशानी का ह़ल पूछा जाए तो वोह भी सूदी क़र्ज़े लेने का ही मश्वरा देता है। ह़ालांकि सूदी लेन देन के बहुत से नुक़्सानात हैं। **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : **जिस क़ौम में सूद फैलता है उस क़ौम में पागल पन फैलता है।**[1]

सूद (Interest) एक सरीह़ ना इन्साफ़ी है, इस के सबब तिजारतों में कमी आती, बाहमी मह़ब्बत को नुक़्सान पहुंचता और ख़ैर ख़्वाही का जज़्बा मफ़्क़ूद हो जाता है। सूदख़ोर किसी की भी क़र्ज़े ह़सना से मदद करना गवारा नहीं करता। इन्सानी त़बीअ़त में इस क़दर दरिन्दगी व बे रह़्मी आ जाती है कि सूदख़ोर हर वक़्त अपने मक़रूज़ की तबाही और बरबादी का ख़्वाहिश मन्द रहता है। सूद के सबब इन्सान दूसरों से ह़सद करने लग जाता है। माल का इस क़दर ह़रीस हो जाता है कि कन्जूसी करने पर उतर आता है ख़ुद अपनी ज़ात पर भी ख़र्च नहीं करता कि कहीं माल कम न हो जाए। सूदख़ोर चाहे जितना भी माल कमा ले दर ह़क़ीक़त दुन्याओ आख़िरत में नुक़्सान ही उठाता है, ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : सूद (Interest) अगर्चे (ज़ाहिरी त़ौर पर) ज़ियादा ही हो आख़िरेकार उस का अन्जाम कमी पर होता है।[2]

नोट : सूद के मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद मालूमात के लिए निगराने शूरा के बयान का तह़रीरी गुलदस्ता **सूद की नुहूसत** मुलाह़ज़ा फ़रमाइए।

वादा ख़िलाफ़ी

प्यारे इस्लामी भाइयो ! वादा निभाने की अहम्मिय्यत से इन्कार मुमकिन नहीं। इस के ज़रीए एतिमाद की फ़ज़ा क़ाइम होती है और

[1] ..... کتاب الکبائر، الکبیرۃ الثانیۃ عشرۃ، ص ۴۵

[2] ..... مسند امام احمد، مسند عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ، ۲/۶۰۰، حدیث: ۴۱۰۷

www.dawateislami.net

तिजारती मुआ़मलात में एतिमाद रीढ़ की हड्डी की हैसिय्यत रखता है। इस के बा वुजूद आज कल ह़ालत येह है कि वादा सिर्फ़ वक़्त गुज़ारी के लिए किया जाता है, मुक़र्ररा तारीख़ पर रक़म वग़ैरा की अदाएगी की सिरे से ही कोई निय्यत नहीं होती। जान बूझ कर टरख़ाते रहते हैं। बाज़ लोगों की येह आ़दत होती है कि रक़म पास होने के बा वुजूद कह देते हैं : शाम को आना, कल ले लेना, परसों मिलेंगे यानी ख़्वाह म ख़्वाह दूसरों को बार बार आने पर मजबूर और ज़लील करते हैं। याद रखिए ! वादा पूरा न करने की निय्यत से और फ़क़त टालने के लिए झूट मूट का वादा करना नाजाइज़ो ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे गिरामी है : जो किसी मुसलमान से अ़ह्द शिकनी करे, उस पर **अल्लाह** पाक, फ़िरिश्तों और तमाम इन्सानों की लानत है और उस का कोई फ़र्ज़ क़बूल होगा न नफ़्ल।[1]

एक मौक़अ़ पर इरशाद फ़रमाया : जो क़ौम बद अ़हदी (यानी वादा ख़िलाफ़ी) करती है **अल्लाह** पाक उन के दुश्मनों को उन पर मुसल्लत़ कर देता है।[2] इस के इ़लावा भी वादा ख़िलाफ़ी के बहुत से नुक़्सानात हैं। बद अ़ह्द शख़्स लोगों में अपना एतिमाद खो देता है। वादा ख़िलाफ़ी बाहमी तअ़ल्लुक़ात को कमज़ोर करती है, उख़ुव्वतो मह़ब्बत और ईसार व हमदर्दी के जज़्बात को मजरूह़ करती है। इस के सबब बाहमी तअ़ल्लुक़ात में बे इत़मीनानी की कैफ़िय्यत पैदा होती है। बद अ़हदी मुनाफ़क़त की अ़लामत है। वादा तोड़ने वाला दुन्या में तो ज़लीलो रुस्वा होता ही है आख़िरत में भी रुस्वाई उस का मुक़द्दर होगी। ह़दीसे पाक में है : **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त जब (क़ियामत के दिन) अव्वलीनो

[1] ..... بخاری، کتاب فضائل المدینة، باب حرم المدینة...الخ، ص۴۹۶، حدیث: ۱۸۷۰

[2] ..... قرة العیون، الباب الخامس فی عقوبة اکل الربا...الخ، ص۳۹۲

www.dawateislami.net

आख़िरीन को जम्अ़ फ़रमाएगा तो हर अ़ह्द तोड़ने वाले के लिए एक झन्डा बुलन्द किया जाएगा कि येह फ़ुलां बिन फ़ुलां की अ़ह्द शिकनी है ।[1]

हसद, वादा ख़िलाफ़ी, झूट, चुग़ली, ग़ीबतो तोहमत
मुझे इन सब गुनाहों से हो नफ़रत या रसूलल्लाह
मेरे अख़्लाक़ अच्छे हों मेरे सब काम अच्छे हों
बना दो मुझ को तुम पाबन्दे सुन्नत या रसूलल्लाह[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तिजारत की मुरव्वजा नाजाइज़ सूरतें

क़िस्तों पर कारोबार

फ़ी नफ़्सिही क़िस्तों पर कारोबार करना बिल्कुल जाइज़ है कि येह उधार फ़रोख़्त की एक सूरत है और किसी चीज़ को बेचते वक़्त बाहमी रिज़ामन्दी से जितनी क़ीमत चाहें मुक़र्रर कर लें इस में शरअ़न कोई हरज नहीं, जब तक कोई ऐसी सूरत न पाई जाए जो इस्लामी उसूलों के ख़िलाफ़ हो । अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त इरशाद फ़रमाता है :

يَاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ بَیْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۟ (پ۵، اَلنِّسَآء:۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो आपस में एक दूसरे के माल नाहक़ न खाओ मगर येह कि कोई सौदा तुम्हारी बाहमी रिज़ामन्दी का हो ।

[1] .... مسلم، کتاب الجھاد و السیر، باب تحریم الغدر، ص۶۸۹، حدیث:۱۷۳۵

[2].....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 332

मगर अफ़्सोस हमारे ज़माने में इस कारोबार की कई ऐसी सूरतें राइज हो चुकी हैं जो नाजाइज़ो ह़राम हैं। मसलन (1) मुआ़हदा (Agreement) करते हुवे येह शर्त़ लगाना कि अगर वक़्त पर क़िस्त़ अदा न की गई तो जुर्माना अदा करना पड़ेगा। येह जुल्मो ज़ियादती और ताज़ीर बिल माल (माली जुर्माना) है जो इस्लाम में जाइज़ नहीं। रद्दुल मुह़तार में है, ताज़ीर बिल माल इब्तिदाए इस्लाम में थी फिर इस को मन्सूख़ कर दिया गया।[1] और मन्सूख़ का हुक्म येह है कि इस पर अ़मल करना ह़राम है।[2] (2) क़िस्तों पर शै बेची मगर साथ में येह कह दिया कि जब तक तमाम क़िस्तें अदा नहीं हो जातीं आप इस शै के मालिक नहीं। येह शर्त़ नाजाइज़ है क्यूंकि शरीअ़त के एतिबार से जब किसी चीज़ पर ईजाबो क़बूल हो जाए और शै ख़रीदार के क़ब्ज़े में चली जाए तो वोह मालिक हो जाता है। फ़तावा आ़लमगीरी में है, बैअ़ का हुक्म येह है कि मुश्तरी **मबीअ़** (ख़रीदी हुई चीज़) का मालिक हो जाए और बाएअ़ **समन** (क़ीमत) का।[3] (3) किराया और चीज़ की क़ीमत को जम्अ़ करना, यानी किसी चीज़ की इस त़रह़ क़िस्तें करना जो कि उस की क़ीमत और किराया दोनों पर मुश्तमिल हों। इस की सूरत यूं बनेगी : एक मोटर साईकल दो हज़ार माहाना क़िस्त़ पर बेची, इस में तै़ येह किया कि एक हज़ार मोटर साईकल की क़ीमत की मद में और एक हज़ार किराये की मद तो येह त़रीक़ा नाजाइज़ है। क्यूंकि सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक सौदे में दो सौदे करने से मन्अ़ फ़रमाया है।[4]

[1] ..... ردالمحتار، کتاب الحدود، باب التعزیر، مطلب فی التعزیر باخذ المال، ۶/۹۸

[2] ..... حاشیہ شلبی مع تبیین الحقائق، کتاب القضاء، باب کتاب القاضی الی القاضی وغیرہ، ۴/۱۸۹

[3] ..... فتاوی ھندیہ، کتاب البیوع، الباب الاول فی تعریف البیع...الخ، ۳/۴

[4] ..... ترمذی، کتاب البیوع، باب ماجاء فی النھی عن بیعتین فی بیعۃ، ص ۳۲۰، حدیث: ۱۲۳۱

www.dawateislami.net

नीलामी की बैअ़

बाहमी रिज़ामन्दी के साथ नीलामी की सूरत में किसी चीज़ की ख़रीदो फ़रोख़्त करना जाइज़ है। मगर इस में भी कई नाजाइज़ सूरतें आ चुकी हैं, आज कल जो सूरत बहुत आ़म हो चुकी है वोह येह है कि फ़क़त शै की क़ीमत बढ़ाने के लिए बोली लगाई जाती है। ख़ास (Special) इस काम के लिए आदमी रखे जाते हैं जिन्हों ने वोह शै तो ख़रीदनी नहीं होती बस दूसरों को उस चीज़ की ज़ियादा क़ीमत देने पर उभारना होता है। सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : नज्श मकरूह है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस से मन्अ़ फ़रमाया, नज्श येह है कि मबीअ़ की क़ीमत बढ़ाए और ख़ुद ख़रीदने का इरादा न रखता हो इस से मक़्सूद येह होता है कि दूसरे गाहक को रग़बत पैदा हो और क़ीमत से ज़ियादा दे कर ख़रीद ले और येह ह़क़ीक़तन ख़रीदार को धोका देना है।[1]

जाली मोहर

बद क़िस्मती से हमारे हां येह सूरत भी बहुत राइज होती चली जा रही है कि शै तय्यार होती है हिन्दुस्तान में मगर उस पर मोहर (Stamp) लगती है मेड इन जापान (Made in Japan) या मेड इन कोरिया (Made in Korea) वग़ैरा, येह सीधा सीधा झूट और धोका है जो कि नाजाइज़ो ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं।

अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ ﴿۶۱﴾ (پ۳، اٰلِ عمرٰن: ۶۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : झूटों पर **अल्लाह** की लानत।

1 .....बहारे शरीअ़त, 2 / 723, हिस्सा : 11

www.dawateislami.net

धोके के मुतअ़ल्लिक़ सरकारे आ़ली वक़ार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो धोका दे वोह हम में से नहीं।[1] ख़याल रहे ! इस काम में कई अफ़राद गुनाह के मुर्तकिब होते हैं। (1) जाली मोहर लगवाने वाला (2) इसे बनाने वाला (3) शै पर लगाने वाला और (4) वोह दुकानदार जो येह शै आगे झूट बोल कर बेचता है।

इस त़रह़ के काम में एक सूरत येह भी पाई जाती है कि एक कम्पनी (Company) की किसी प्रॉडक्ट (Product) की नक़्ल तय्यार करना और फिर उस पर उसी कम्पनी की मोहर लगा देना। येह भी कई त़रह़ से ह़राम है : (1) झूट के सबब (2) ख़रीदार को धोका देने और (3) कम्पनी का नाम इस्तिमाल करने के बाइ़स। क्यूंकि किसी रजिस्टर कम्पनी का नाम इस्तिमाल करना क़ानूनन जुर्म है और जो शै क़ानूनन जुर्म हो, रिश्वत व ज़िल्लत का बाइ़स बने वोह भी नाजाइज़ होती है। आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : किसी क़ानूनी जुर्म का इर्तिकाब कर के अपने आप को बिला वज्ह ज़िल्लतो बला के लिए पेश करना शरअ़न भी जुर्म है।[2]

अलबत्ता किसी कम्पनी से मिलता जुलता नाम रखना जाइज़ है लेकिन अगर उस में भी झूट व धोकादेही पाई गई तो नाजाइज़ो गुनाह। मसलन किसी गाहक ने आ कर कहा फ़ुलां कम्पनी की चीज़ दे दें अब उसे उसी कम्पनी की चीज़ देना होगी अगर उस से मिलते जुलते नाम की चीज़ दे दी जिसे वोह धोका खा कर ले जाए तो येह ह़राम है।

जाली बिल

पर्चेज़िंग ऑफ़ीसर (Purchasing Officer) का ज़ियादा बिल

[1] ..... مسلم، کتاب الایمان، باب قول النبی صلی اللہ علیہ وسلم: من غشنا فلیس منا، ص ۵۷، حدیث: ۱۰۲

[2] .....फ़तावा रज़विय्या, 23 / 581

www.dawateislami.net

बनवाना मसलन 100 की चीज़ का 110 में बिल बनवाना और इज़ाफ़ी रक़म अपने पास रखना येह ह़राम है कि येह धोका है। दुकानदार का ऐसा बिल बना कर देना भी ह़राम क्यूंकि वोह गुनाह में मुआ़वनत कर रहा है जो कि हुक्मे क़ुरआनी ﴿لَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ﴾ (پ۶،المآئدۃ:۲) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न दो) के सरीह़ ख़िलाफ़ है। यूं ही एक्सपोर्ट (Export) के कारोबार में जाली बिल बना कर या किसी से बिल ख़रीद कर ज़ियादा ख़रीदारी (Purchasing) दिखाना (Show करना) ताकि हुकूमत से ज़ियादा से ज़ियादा नफ़्अ़ ह़ासिल किया जाए ह़राम है। इस त़रीक़े से लिए गए नफ़्अ़ का कोई इस्तिमाल जाइज़ नहीं बहर सूरत हुकूमत को वापस ही करना होगा।

मुज़ारबत और शिराकत की नाजाइज़ सूरतें

(1) मुज़ारबत में रासुल माल (सरमाए) का नक़्दी (Cash) की सूरत में होना ज़रूरी है,[1] अगर इस की जगह दो बोरी गन्दुम दे कर कहा कि इस से कारोबार करो तो येह नाजाइज़ है। (2) इसी त़रह़ रासुल माल का मालूम होना भी ज़रूरी है कि कितना है,[2] अगर किसी ने थेले में पैसे डाल कर दे दिये, अब न देने वाले को पता कि कितना है और न लेने वाले को तो येह जाइज़ नहीं। (3) मुज़ारबत में येह शर्त़ लगाना कि नुक़्सान दोनों का होगा या सिर्फ़ मुज़ारिब (Working Partner) का होगा नाजाइज़ है। क्यूंकि मुकम्मल ख़सारा रब्बुल माल (Investor) ने बरदाश्त करना होता है।[3] कारोबार में नफ़्अ़ हुवा है तो नफ़्अ़ से पूरा किया जाएगा वरना सरमाए (Capital) से पूरा किया

[1] .... درمختار، کتاب المضاربۃ، ص۵۴۵

[2] .... فتاوی ھندیہ، کتاب المضاربۃ، الباب الاول فی تفسیرھا ...الخ، ۴/۳۱۲

[3].....बहारे शरीअ़त, 3 / 4, हिस्सा : 14 ब तसर्रुफ़

जाएगा । लिहाज़ा ऐसी किसी शर्त का कोई एतिबार नहीं येह शर्तें फ़ासिद है । अलबत्ता इस की वज्ह से मुज़ारबत फ़ासिद नहीं होती । (4) फ़रीक़ैन का नफ़्अ़ अ़दद (Figure) के हिसाब से मुक़र्रर कर लेना कि हर महीने दो हज़ार या सालाना पच्चीस हज़ार येह नाजाइज़ है क्यूंकि नफ़्अ़ फ़ीसद (Percentage) के हिसाब से तै किया जाना ज़रूरी है ।[1] (5) कोई कारोबार पहले ही से शुरूअ़ है अब उस में शिर्कत करना येह भी जाइज़ नहीं, इस की वज्ह येह है कि शिर्कत बिल माल में दोनों त़रफ़ से नक़्दी का होना ज़रूरी है अगर दोनों त़रफ़ से सामान हो या एक त़रफ़ सामान और एक त़रफ़ से नक़्दी तो शिर्कत जाइज़ नहीं । मसलन एक शख़्स की किरयाने की दुकान है, जिस में आटा, दाल, चावल वग़ैरा बहुत सी चीज़ें मौजूद हैं और उस का काम भी चल रहा है अब उस ने शिर्कत के लिए किसी से एक लाख रुपै ले कर दुकान में शामिल कर लिए येह नाजाइज़ है क्यूंकि उस का एक लाख रूपिया किन कामों में लगा उस का कितना नफ़्अ़ और कितना नुक़्सान हुवा उस का हिसाब चलते हुवे काम में रखना बहुत मुश्किल है । मुहीते बुरहानी में है, शिर्कत जब माल के साथ हो तो शिर्कते इनान[2] और मुफ़ावज़ा[3]

1 .....बहारे शरीअ़त, 3 / 2 हिस्सा : 14 ब तसर्रुफ़

2 .....शिर्कते इनान येह है कि दो शख़्स किसी ख़ास नौअ़ की तिजारत या हर क़िस्म की तिजारत में शिर्कत करें मगर हर एक दूसरे का ज़ामिन न हो सिर्फ़ दोनों शरीक आपस में एक दूसरे के वकील होंगे लिहाज़ा शिर्कते इनान में येह शर्त है कि हर एक ऐसा हो जो दूसरे को वकील बना सके. (فتاوی ھندیہ، کتاب الشرکۃ الباب الثالث فی شرکۃ العنان، الفصل الاول، ۲/۳۳۵/درمختار، کتاب الشرکۃ، ص۳۶۴)

3 .....शिर्कते मुफ़ावज़ा येह है कि हर एक दूसरे का वकील व कफ़ील हो यानी हर एक का मुत़ालबा दूसरा वुसूल कर सकता है और हर एक पर जो मुत़ालबा होगा दूसरा उस की त़रफ़ से ज़ामिन है और शिर्कते मुफ़ावज़ा में येह ज़रूर है कि दोनों के माल बराबर हों और नफ़्अ़ में दोनों बराबर के शरीक हों और तसर्रुफ़ व दीन में भी मुसावात हो, लिहाज़ा आज़ाद व गुलाम में और नाबालिग़ व बालिग़ में और मुसलमान व काफ़िर में और आ़क़िल व मजनून में और दो नाबालिगों में और दो गुलामों में शिर्कते मुफ़ावज़ा नहीं हो सकती । (درمختار، کتاب الشرکۃ، ص۳۶۳ ملتقطًا)

www.dawateislami.net

जाइज़ नहीं मगर जब कि दोनों का माल वोह समन हो जो उ़क़ूदे मुबादला में मुतअ़य्यन नहीं होते जैसे दिरहमो दीनार और जो चीज़ें उ़क़ूदे मुबादला में मुतअ़य्यन हो जाती हैं जैसा कि सामान तो इस में शिर्कत दुरुस्त नहीं, चाहे येह सामान दोनों का रासुल माल हो या उन में से किसी एक का हो ।[1] हां अगर उस ने उन रूपियों से कोई नई आइटम (New Item) ला कर रख ली और उस का हिसाब भी अलग ही रखता है तो जाइज़ है । (6) मजहूल कम्पनी का हिस्सेदार बनना, उस की सूरत येह है कि मार्केट में बाज़ कम्पनियां एनाउन्स (Announce) होती हैं कि फ़ुलां कम्पनी मार्केट में अपने शेर (Share) ला रही है, उस के शेर बिकना शुरूअ़ हो जाते हैं ह़ालांकि उस कम्पनी का वुजूद ही नहीं होता और न ही उस के असासे वुजूद में आए होते हैं जब कि मार्केट में परचियां बिक रही होती हैं इस के जवाज़ की भी कोई गुन्जाइश नहीं क्यूंकि ख़रीदो फ़रोख़्त की शराइत़ में से है कि जो चीज़ बेची जा रही हो वोह मौजूद भी हो ।[2]

क़र्ज़ पर नफ़अ़

ताजदारे ह़रमैन, सरवरे कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''क़र्ज़ और तिजारत दोनों को इकठ्ठा करना ह़लाल नहीं ।''[3] इस की सूरत येह है किसी आदमी को कोई शै इस शर्त़ पर बेचना कि तुम मुझे इतना क़र्ज़ दो या क़र्ज़ दे कर येह कहना कि फ़ुलां सामान हमें ही बेचो । हमारे हां येह त़रीक़ेकार आढ़तियों और मुख़्तलिफ़ क़िस्म के ताजिरों में राइज है कि

[1] ..... المحیط البرھانی فی فقہ النعمانی، کتاب الشرکۃ، الفصل الاول فی بیان انواع الشرکات...الخ، ۶/۵

[2] .....बहारे शरीअ़त, 2 / 616, हिस्सा : 11 ब तसर्रुफ़

[3] ..... ترمذی، کتاب البیوع، باب ماجاء فی کراھیۃ بیع ما لیس عندك، ص ۳۲۱، حدیث: ۱۲۳۴

www.dawateislami.net

वोह किसान को बीज या खाद वग़ैरा की मद में क़र्ज़ा देते हैं और येह शर्त लगा देते हैं कि तुम अपनी फ़स्ल हमें ही बेचोगे। येह क़र्ज़ पर नफ़्अ़ उठाना है जो कि सूद के ज़ुमरे में दाख़िल है। इसी त़रह़ कोई नया कारोबार शुरूअ़ करना या कोई प्रॉडक्ट तय्यार करना चाहता है तो उसे इस लिए क़र्ज़ देना कि अपना माल सिर्फ़ हमें फ़रोख़्त करोगे किसी और को नहीं तो येह भी नाजाइज़ो ह़राम है। **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जो क़र्ज़ कोई नफ़्अ़ खींच लाए वोह सूद है।[1]

लकी और बोली वाली कमेटी

लकी कमेटी दो त़रह़ की होती है : (1) **पैसे दे कर सामान लेना :** इस की सूरत यूं होती है कि लोग पैसों के ज़रीए़ से कमेटी डालते हैं जिस की कमेटी खुलती चली जाती है वोह मोटर साईकल (Motorcycle) वग़ैरा ले जाता है और बाक़ी अदाएगियों से आज़ाद हो जाता है। ऐसी कमेटी नाजाइज़ है कि इस में जहालत पाई जा रही है। किसी को मोटर साईकल एक ही कमेटी पर मिल रही है तो किसी को दो पर और जिस का नाम कमेटी में नहीं निकलता उसे पूरी क़ीमत पर, लिहाज़ा ऐसी ख़रीदो फ़रोख़्त जिस के अन्दर चीज़ या क़ीमत में जहालत हो वोह जाइज़ नहीं होती। फ़तावा आ़लमगीरी में है, मबीअ़ और क़ीमत में जहालत का होना ख़रीदो फ़रोख़्त के जाइज़ होने में रुकावट है।[2]

(2) **पैसे दे कर पैसे लेना :** मसलन एक लाख की कमेटी है सब ने पांच पांच हज़ार डाले, अब जिस की पहली कमेटी खुल गई वोह बक़िय्या अदाएगियां नहीं करेगा। पहली कमेटी वाला पांच हज़ार दे कर पचानवे

[1] ..... کنز العمال، کتاب الدین، الباب الثانی، فصل فی لواحق...الخ، جزء ۶، ۳/۹۹، حدیث: ۱۵۵۱۲

[2] ..... فتاوی ھندیہ، کتاب البیوع، الباب التاسع، الفصل الثامن فی جھالۃ المبیع والثمن، ۳/۱۳۱

www.dawateislami.net

हज़ार का नफ़्अ़ ले रहा है और दूसरी कमेटी वाला दस हज़ार दे कर नव्वे हज़ार का नफ़्अ़ ले रहा है येह जुवा और क़र्ज़ पर नफ़्अ़ लेना है जो कि नाजाइज़ो ह़राम है।

लकी कमेटी की त़रह़ **बोली वाली कमेटी** भी नाजाइज़ और गुनाह है। इस की सूरत कुछ यूं होती है कि मसलन बीस हज़ार की कमेटी होगी। मेम्बरान में से कोई एक कहता है मुझे इस माह पैसों की ज़रूरत है लिहाज़ा मुझे पन्दरह हज़ार ही दे दिया जाए तो उसे पन्दरह हज़ार दे दिया जाता है और बाक़ी बचे हुवे पैसे सब मेम्बरान के माबैन तक़्सीम होते हैं। येह बाक़ी बची हुई रक़म जो आपस में तक़्सीम की जाती है वोह लेना जाइज़ नहीं क्यूंकि येह पैसे बैए़ फ़ासिद[1] में आ रहे हैं और बैए़ फ़ासिद में जो नफ़्अ़ आता है वोह सूद होता है। बह़रुर्राइक़ में है : हर बैए़ फ़ासिद सूद है।[2]

लम्ह़ए फ़िक्रिय्या

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ज़रा ग़ौर कीजिए फ़ी ज़माना हमारे तिजारती मुआ़मलात और मार्केटों में कितने ग़ैर शरई त़रीक़े राइज हो चुके हैं जिन पर चलते हुवे हम नाजाइज़ो ह़राम कमाई की दलदल में फंसते चले जा रहे हैं। शायद इसी सबब हमारी ज़िन्दगियों में सुकून नहीं, त़रह़ त़रह़ की परेशानियों से दो चार हैं और हमारी दुआ़एं क़बूल नहीं होतीं।

[1] ....अगर रुक्ने बैअ़ (यानी ईजाबो क़बूल या चीज़ के लेने देने में) या मह़ले बैअ़ (यानी मबीअ़) में ख़राबी न हो बल्कि इस के इ़लावा कोई ख़राबी हो तो वोह बैए़ फ़ासिद है मसलन समन (क़ीमत) ख़ुमर (शराब) हो या जो चीज़ बेची है उस को किसी वज्ह से ख़रीदार के ह़वाले न कर सकता हो या बैअ़ में कोई शर्त़ अ़क़्द के तक़ाज़े के ख़िलाफ़ हो।

(बहारे शरीअ़त, 2 / 696, ह़िस्सा : 11 ब तसर्रुफ़)

[2] ..... بحر الرائق شرح كنز الدقائق، كتاب البيع، باب البيع الفاسد، ٦/١١٢

www.dawateislami.net

ह़दीसे पाक में है : बाज़ लोग हाथ फैला फैला कर गिड़गिड़ा कर दुआएं मांगते हैं ह़ालांकि उन की ग़िज़ा और उन का लिबास ह़राम कमाई का होता है, फिर उन की दुआ क्यूं कर क़बूल हो ![1]

लिहाज़ा एक मुसलमान ताजिर के लिए येह ज़रूरी है कि वोह सिर्फ़ों सिर्फ़ रिज़्क़े ह़लाल ही कमाए। मार्केट में राइज नाजाइज़ निज़ाम में ही न रंग जाए। बल्कि इस ग़ैर शरई निज़ाम से ख़ुद भी बचे और दूसरों को भी बचाने की कोशिश करे। यूं इस का कमाना जहां इ़बादत शुमार होगा वहीं اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف व نَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر का सवाब भी हाथ आएगा।

हर काम शरीअ़त के मुत़ाबिक़ करूं काश !
या रब तू मुबल्लिग़ मुझे सुन्नत का बना दे
अख़्लाक़ हों अच्छे मेरा किरदार हो सुथरा
मह़बूब का सदक़ा तू मुझे नेक बना दे [2]

ताजिरों की दीनी ख़िदमात

प्यारे इस्लामी भाइयो ! तिजारत के शोबे को जिस त़रह़ हुसूले रिज़्क़ के लिए नुमायां हैसिय्यत ह़ासिल है, इसी त़रह़ इस शोबे से वाबस्ता नेक सीरत अफ़राद ने क़ुरआनो सुन्नत की तब्लीग़ो इशाअ़त में भी नुमायां कामयाबी ह़ासिल की है चूंकि **अल्लाह** वालों का एक अन्दाज़ हुवा करता है कि वोह जहां भी रहें, जिस काम से भी वाबस्ता हों, उस में दीन की ख़िदमत के पहलू ज़रूर तलाश करते हैं। हर मुमकिना सूरत में ख़िदमते दीन को बजा लाते हैं। तिजारत चूंकि एक ऐसा शोबा है कि इस में नए नए और आ़मो ख़ास अफ़राद से वासित़ा पड़ता है, दूरो नज़दीक सफ़र होता है

1 .....इस्लामी ज़िन्दगी, स. 139-صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب قبول الصدقۃ...الخ، ص ۵۰۷، حدیث ۱۰۱۵

2 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 115 मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

इस वज्ह से दीन की ख़िदमत करने वाले शाएक़ीन को बहुत मवाक़ेअ़ मिलते हैं कि वोह लोगों को **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे ह़बीब, त़बीबों के त़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अह़कामात की त़रफ़ राग़िब कर सकें।

इस के बर अ़क्स आ़म कारोबारी लोग उ़मूमन अपनी बोल चाल में तो बहुत मोह़तात़ होते हैं कि उन के मुंह से कोई भी ऐसी बात न निकल जाए या उन से कोई ऐसा काम सरज़द न हो जाए जो उन के कारोबारी तअ़ल्लुक़ात पर मन्फ़ी असरात मुरत्तब करे। वोह न तो किसी के बुरे मज़हब व अ़क़ीदे पर उस की रहनुमाई करते हैं और न ही किसी के अ़मल व ह़रकत के बारे में कोई बात करने की ज़रूरत महसूस करते हैं। येह लोग मस्लह़त और आ़फ़िय्यत को पसन्द करते हैं, तमाम मुआ़मलात अपनी आंखों से देखते हैं मगर अपनी कारोबारी मजबूरियों की वज्ह से चुप साध लेते हैं, किसी से कुछ नहीं कहते बल्कि अक्सरिय्यत के जज़्बात की तरजुमानी करते और उन की राए को सह़ीह़ क़रार देते हैं, लेकिन हमारे ताजिर अस्लाफ़े किराम का अन्दाज़ आ़म कारोबारी लोगों से हट कर ख़िदमते दीन की ह़िर्स से मुज़य्यन होता था। उन्हें इस बात की क़त़्अ़न कोई परवा न होती कि अगर मैं ने सामने वाले को नेकी की दावत दी या बुरे काम से मन्अ़ किया तो मेरे कारोबार में नुक़्सान होगा बल्कि वोह ह़ज़रात तो सिर्फ़ और सिर्फ़ **अल्लाह** पाक और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा की ख़ातिर ही अपने तमाम तर मुआ़मलात को सर अन्जाम देते थे।

आइए! चन्द ऐसी शख़्सिय्यात के मुतअ़ल्लिक़ जानते हैं, जिन्हों ने तिजारत भी की और दीन के कामों में भी बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लिया मगर कभी भी अपनी तिजारती मसरूफ़िय्यात को दीन की राह में रुकावट न बनने दिया।

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस्लाम के ख़लीफ़ए अव्वल अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक कामयाब ताजिर थे। आप का शुमार मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا के ग़नी तरीन लोगों में होता था[1] जब जवानी की दहलीज़ पर क़दम रखा तो कपड़े की तिजारत को इख़्तियार फ़रमाया और अपने आला अख़्लाक़, साफ़ गुफ़्तगू, ज़बान की सच्चाई और ईमानदारी से ख़ूब नफ़्अ़ हासिल किया और थोड़े ही अ़र्से में मश्हूरो मारूफ़ ताजिरों में शुमार होने लगे।[2]

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब इस्लाम की दौलत से माला माल हुवे तो उसी दिन से इस्लाम की ख़िदमत और तब्लीग़ो इशाअ़त को अपना अव्वलीन फ़र्ज़ समझ कर इस के लिए कोशिश फ़रमाना शुरूअ़ कर दी चूंकि आप एक ताजिर थे तो सब से पहले आप ने अपने दीगर ताजिर भाइयों को इस्लाम के फ़वाइद से मुत्तलअ़ किया और इस जानिब राग़िब किया। चुनान्चे, मरवी है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिस दिन इस्लाम लाए उसी दिन हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान, हज़रते सय्यिदुना तल्हा, हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर और हज़रते सय्यिदुना साद बिन अबी वक़्क़ास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) के पास पहुंचे और उन्हें इस्लाम की दावत पेश करने के बाद इस्लाम में दाख़िल कर लिया और दूसरे दिन हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊ़न, हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह, हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़, हज़रते सय्यिदुना अबू सलमा और हज़रते सय्यिदुना अरक़म बिन अबी अरक़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) को भी इस्लाम की दावत पेश की तो वोह भी आग़ोशे इस्लाम में आ गए।[3]

---

1 .....मिरआतुल मनाजीह, 5 / 387 ब तसर्रुफ़

2 .....फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर, स. 37 ब तसर्रुफ़

3 .....تاریخ ابن عساکر، رقم ۳۳۹۸، عبد اللہ ویقال عتیق بن عثمان...الخ، ۳۰/۴۹ مفھومًا

www.dawateislami.net

हुए फ़ारूक़ो उ़स्मानो अ़ली जब दाख़िले बैअ़त
बना फ़ख़्रे सलासिल सिलसिला सिद्दीक़े अक्बर का
बयां हो किस ज़बां से मर्तबा सिद्दीक़े अक्बर का
है यारे ग़ार, महबूबे ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर का [1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

दावते इस्लामी हिन्द के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब **फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आज़म** जिल्द 1 सफ़ह़ा 71 पर है : पूरे अ़रब में ज़ियादा तर मआ़श का ज़रीआ़ तिजारत था, इस लिए सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी तिजारत शुरूअ़ कर दी और इस में इतना नफ़्अ़ कमाया कि आप का शुमार मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के अग़्निया यानी मालदारों में होने लगा। रिवायात से येही मालूम होता है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तिजारत को जारी रखा यहां तक कि ख़लीफ़ा बन गए और बादे ख़िलाफ़त भी तिजारत करते रहे। चुनान्चे, इमाम इब्राहीम नख़ई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़लीफ़ा होने के बा वुजूद तिजारत किया करते थे।[2]

फ़ारूक़े आज़म और नेकी की दावत

मन्क़ूल है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का एक नसरानी ग़ुलाम था, जिस का नाम "**उस्सिक़**" था। उस का बयान है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर

1 .....ज़ौक़े नात, स. 76 ता 77 मुल्तक़त़न।

2 ..... تاریخ الاسلام، رقم ۱۰۵، عمر بن الخطاب، ۹۶/۲

www.dawateislami.net

फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझ से फ़रमाया : अगर तुम इस्लाम क़बूल कर लो तो हम तुम से मुसलमानों के मुआ़मलात में मदद लेंगे क्यूंकि हमारे नज़्दीक उन के मुआ़मलात में काफ़िरों से मदद लेना जाइज़ नहीं है। मैं ने इस्लाम क़बूल करने से इन्कार कर दिया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : لَاۤ اِكْرَاهَ فِی الدِّیْنِ यानी दीन में कोई ज़बरदस्ती नहीं। फिर जब आप की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो मुझे आज़ाद फ़रमा दिया हालांकि उस वक़्त भी मैं नसरानी था और इरशाद फ़रमाया : तुम आज़ाद हो जहां जाना चाहो चले जाओ।(1)

इसी त़रह़ का एक और वाक़िआ़ है कि एक मरतबा एक बुढ़िया आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास अपनी किसी ज़रूरत से आई तो आप ने उसे इस्लाम की दावत देते हुवे इरशाद फ़रमाया : ऐ बुढ़िया ! तुम मुसलमान हो जाओ सलामती वाली हो जाओगी, **अल्लाह** पाक ने ह़ज़रत मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया है : उस ने आप के सामने अपना सर खोला तो उस के बाल बिल्कुल सफ़ेद हो चुके थे। गोया उस ने येह बताया कि मैं बिल्कुल बूढ़ी हो चुकी हूं, फिर कहा : अब तो मौत भी मेरे बहुत क़रीब है। येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ऐ **अल्लाह** तू गवाह हो जा। (यानी मैं ने इसे इस्लाम क़बूल करने पर मजबूर नहीं किया।)(2) फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ुरआने पाक की येह आयते मुबारका तिलावत की :

لَاۤ اِكْرَاهَ فِی الدِّیْنِ ۙ۫ (پ۳، البقرۃ:۲۵۶) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** कुछ ज़बरदस्ती नहीं दीन में।(3)

[1] ....طبقات ابن سعد، رقم ۲۰۷۱، اسق مولی عمر بن الخطاب، ۶/۲۰۲

[2] ....سنن کبری للبیہقی، کتاب الطہارۃ، باب التطہر فی اوانی المشرکین...الخ، ۱/۱۱۷، حدیث:۱۳۰

[3] .... تفسیر در منثور، پ۳، البقرۃ، تحت الآیۃ:۲۵۶، ۲/۲۲

मनवाना हमारा मन्सब नहीं

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इन दोनों वाक़िआ़त से जहां हमें सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमते दीन ब सूरते तब्लीग़े दीन का पता चला वहीं येह दर्स भी मिला कि चाहे कोई माने या न माने हमें नेकी की दावत देने से ख़ुद को महरूम नहीं करना चाहिए, क्यूंकि किसी को मनवाना हमारा मन्सब नहीं हमारा काम कोशिश किए जाना, नेकी की दावत पहुंचाना और सवाबे आख़िरत कमाना है । कामयाबी देने वाली ज़ात रब्बे काएनात جَلَّ جَلَالُہٗ की है ।

एक मरतबा **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बारगाहे रब्बुल अनाम में अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** ! जो अपने भाई को नेकी का हुक्म करे और बुराई से रोके उस की जज़ा क्या है ? **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त ने इरशाद फ़रमाया : मैं उस के हर हर कलिमे के बदले एक एक साल की इ़बादत का सवाब लिखता हूं और उसे जहन्नम की सज़ा देने में मुझे ह़या आती है ।[1]

करम से "नेकी की दावत" का ख़ूब जज़्बा दे
दूं धूम सुन्नते महबूब की मचा या रब [2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

मरवी है कि हिजरत का हुक्म मिलने के बाद जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपना सब मालो मताअ़ मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में छोड़ कर ख़ाली हाथ मदीनए मुनव्वरा

[1] ..... مکاشفۃ القلوب، باب فی الامر بالمعروف والنھی عن المنکر، ص ٦٥

[2] .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम) स. 77

www.dawateislami.net

زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا पहुंचे तो दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दूसरे मुहाजिरीन की त़रह़ इन्हें भी एक अन्सारी सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना साद बिन रबीअ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के साथ रिश्तए उख़ुव्वत में पिरो दिया जो मदीने शरीफ़ के बहुत बड़े मालदार शख़्स थे। उन्हों ने अपना आधा माल आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िदमत में पेश कर दिया मगर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इस अ़ज़ीम पेशकश को क़बूल न किया बल्कि उन से फ़रमाया : **अल्लाह** पाक आप को बरकतें अ़त़ा फ़रमाए, मैं आप के माल से कुछ न लूंगा, बस आप बाज़ार का रास्ता बता दीजिए जहां तिजारत हो सके। चुनान्चे, उन्हों ने आप को बाज़ारे **क़ैनुक़ाअ़** की राह दिखाई तो आप ने वहां घी और पनीर की तिजारत शुरूअ़ कर दी।[1]

शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه लिखते हैं : रफ़्ता रफ़्ता ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की तिजारत में इतनी ख़ैरो बरकत और तरक़्क़ी हुई कि ख़ुद उन का क़ौल है कि **मैं मिट्टी को छू देता हूं तो सोना बन जाती है!**[2]

मन्क़ूल है कि इन का सामाने तिजारत सात सौ (700) ऊंटों पर लद कर आता था और जिस दिन मदीने में इन का तिजारती सामान पहुंचता था तो तमाम शह़र में धूम मच जाती थी।[3]

ख़िदमते दीन में किरदार

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने दीन की ख़िदमत में यूं अपना ह़िस्सा शामिल किया

[1] .....بخاری، کتاب البیوع، باب ماجاء قول اللہ تعالی، ص ۵۳۵، حدیث: ۲۰۴۸ مفھومًا

[2].....सीरते मुस्त़फ़ा, स. 187

[3] .....اسد الغابۃ، رقم ۳۳۷۰، عبد الرحمن بن عوف، ۳/۴۷۸ مفھومًا

www.dawateislami.net

कि दीगर नेक कामों में शिर्कत के साथ साथ ख़ूब ख़ूब इल्मे दीन ह़ासिल कर के दूसरों तक पहुंचाने में भी मसरूफ़े अ़मल रहे।

अ़हदे रिसालत में आ़म तौ़र पर किसी को कोई मस्अला दरपेश होता तो वोह मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे आ़ली में ह़ाज़िर हो कर दरयाफ़्त कर लेता जो बारगाहे नबुव्वत में ह़ाज़िर न हो सकता वोह उन सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن से शरई रहनुमाई ह़ासिल कर लेता जिन्हें सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इल्मी वजाहत की बिना पर उस काम की इजाज़त अ़ता फ़रमा रखी थी।[1] आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का शुमार भी उन्ही इल्मी शख़्सिय्यात में होता था। चुनान्चे, रियाजुन्नज़रह में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه उन ज़ी वक़ार शख़्सिय्यात में से हैं जो सरकारे दो जहां, मक्की मदनी सुल्त़ां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक ज़माने में फ़तवा दिया करते थे।[2]

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में आप की इल्मी बसीरत इस क़दर मुमताज़ थी कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه भी मसाइले शरइय्या में आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मुशावरत फ़रमाया करते थे। रिवायत में आता है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने जब अपने दौरे ख़िलाफ़त में शराब नोशी की ह़द पर मश्वरा त़लब फ़रमाया तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने अ़र्ज़ की : मेरी राए येह है कि ह़ुदूद में जो सब से कम ह़द है (यानी 80 कोड़े) उसे इख़्तियार फ़रमाइए। लिहाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने शराब नोशी की येही ह़द मुक़र्रर फ़रमा दी।[3]

---

1 .....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़, स. 100

2 ..... الریاض النضرۃ، الباب الخامس، القسم الثانی، الفصل التاسع، ذکر اختصاصہ بالفتوی...الخ، ۱/۱۳۶

3 ..... ترمذی، کتاب الحدود، باب ماجاء فی حد السکران، ص ۳۷۰، حدیث: ۱۴۴۳ مفہوماً

www.dawateislami.net

प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इतने बड़े ताजिर होने के बा वुजूद इ़ल्मी मक़ामो मर्तबे में भी अपनी मिसाल आप थे । मगर अफ़्सोस एक हम हैं कि इ़ल्मे दीन सीखने सिखाने से कोसों दूर हैं । आह ! हमें तो दुरुस्त त़रीक़े से देख कर कुरआन पढ़ना भी नहीं आता । ख़ुदारा ख़ुद पर रह़म कीजिए और वक़्त निकाल कर अपने सीनों को कुरआन और इ़ल्म की रौशनी से मुनव्वर कीजिए । इस के लिए आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दावते इस्लामी हिन्द के तह़्त होने वाले मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में शिर्कत को अपना मामूल बना लीजिए, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से जहां आप सह़ीह़ तलफ़्फ़ुज़ के साथ कुरआने पाक पढ़ना सीखेंगे, वहीं रोज़ मर्रह के दीनी ज़रूरी मसाइल से भी आगाही नसीब होगी ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मजलिसे मद्रसतुल मदीना बालिग़ान के तह़्त मसाजिद के इ़लावा मुख़्तलिफ़ **मार्केटों** वग़ैरा में भी तालीमे कुरआन को आ़म करने के लिए मद्रसतुल मदीना बालिग़ान का एहतिमाम किया जाता है, **ताजिर इस्लामी भाई** इस से फ़ाएदा उठाते हुवे ख़ुद भी कुरआने करीम पढ़ने और अपने तह़्त काम करने वालों (Workers) को भी कुरआने करीम पढ़ाने की सआ़दत ह़ासिल करें । क़ाफ़िलों में भी सफ़र कर के दीने इस्लाम की सर बुलन्दी के लिए अपनी ख़िदमात पेश कर सकते हैं ।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कपड़े के सौदागर (ताजिर) थे, अपनी तिजारत की वज्ह बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : अगर पांच शख़्सिय्यात न होतीं तो मैं तिजारत

www.dawateislami.net

ही न करता, पूछा गया वोह पांच शख़्सिय्यात कौन हैं तो फ़रमाया : (1) ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी (2) ह़ज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना (3) ह़ज़रते फ़ुजै़ल बिन इयाज़ (4) ह़ज़रते मुह़म्मद बिन सम्माक और (5) ह़ज़रते इब्ने उ़लय्यह (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن) आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ तिजारत की ख़ाति़र ख़ुरासान तक का सफ़र फ़रमाते और जो नफ़्अ़ ह़ासिल होता, उस में से ज़रूरत के मुता़बिक़ अपने अहलो अ़याल और ह़ज का ख़र्चा निकाल कर बाक़ी इन पांच हस्तियों को भिजवा देते।[1] आप की सारी ज़िन्दगी ह़ज, तिजारत और जिहाद के लिए सफ़र करते गुज़री। आप ही वोह पहले शख़्स हैं जिन्हों ने जिहाद के मौज़ूअ़ पर किताब तस्नीफ़ फ़रमाई।[2]

ख़िदमते दीन का मुन्फ़रिद अन्दाज़

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की दीने इस्लाम की ख़िदमत का एक मुन्फ़रिद अन्दाज़ था, आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ उन अहले इ़ल्म लोगों पर अपना सरमाया ख़र्च करते, जो दीन की तब्लीग़ो इशाअ़त में मसरूफ़ होते थे ताकि वोह फ़िक्रे मआ़श से बे फ़िक्र हो कर मुस्तक़िल मिज़ाजी से येह फ़रीज़ा अन्जाम देते रहें, चुनान्चे, ह़ज़रते ह़िब्बान बिन मूसा رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ बयान करते हैं : ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को अपना शहर छोड़ कर दूसरे शहरों में माल तक़्सीम करने पर मलामत की गई तो आप ने फ़रमाया : मैं ऐसी जगहें जानता हूं, जहां साह़िबे फ़ज़्लो कमाल और मुख़्लिस लोग रहते हैं, जिन्हों ने अच्छी त़रह़ इ़ल्मे ह़दीस ह़ासिल किया और लोगों को उन के इ़ल्म की ज़रूरत है, अगर हम ने उन को छोड़ दिया तो उन का इ़ल्म ज़ाएअ़ हो जाएगा और अगर हम ने उन की मदद जारी

[1] .... تاریخ بغداد، رقم ۳۲۷۷، اسماعیل بن ابراھیم بن مقسم...الخ، ۲/۲۳۴

[2] .... الاعلام للزرکلی، حرف العین، ابن المبارك، ۴/۱۱۵ ملتقطًا

www.dawateislami.net

रखी तो वोह नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के लिए इल्म फैला देंगे।[1]

हज़रते दालज رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

हज़रते सय्यिदुना दालज बिन अहमद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बहुत **मालदार ताजिर** होने के साथ साथ उस्तादुल मुहद्दिसीन (हदीस पढ़ाने वालों के उस्ताद) और एक अज़ीम फ़क़ीह (इल्मे फ़िक़्ह में महारत रखने वाले) भी थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ज़रीअए मआश के लिए कपड़े की तिजारत को इख़्तियार फ़रमाया।[2] जो नफ़्अ़ हासिल होता उसे ख़ैरो भलाई और दीन के कामों में भी ख़र्च फ़रमाया करते।

ख़ैरो भलाई के कामों में मददगार

मन्क़ूल है कि हज़रते इब्ने अबी मूसा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को कहीं माल की अदाएगी करनी थी। उन का बयान है कि ज़मीन अपनी तमाम तर वुस्अ़त के बा वुजूद मुझ पर तंग हो गई और मैं बहुत परेशान हो गया, कुछ समझ नहीं आ रही थी कि माल किस तरह से अदा करूं? इसी परेशानी के आ़लम में सुब्ह़ सवेरे कर्ख़ जाने के इरादे से अपने ख़च्चर पर सुवार हो गया, मेरा ख़च्चर कहां जा रहा था मुझे कुछ पता नहीं था। ख़च्चर दर्बुस्सलूली अ़लाक़े में वाक़ेअ़ हज़रते सय्यिदुना दालज رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मस्जिद के दरवाज़े पर आ कर रुक गया, मैं मस्जिद में दाख़िल हुवा और उन के पीछे फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी। नमाज़ के बाद हज़रते सय्यिदुना दालज رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मेरी तरफ़ मुतवज्जेह हुए, मुझे ख़ुश आमदीद कहा और अपने घर ले गए, वहां दस्तरख़्वान बिछाया गया और खाने के लिए हरीसा (अ़रब का मश्हूर हल्वा) पेश किया, मैं सोचों में गुम खाने लगा, आप ने

[1] .....سیر اعلام النبلاء، رقم ۱۲۸۴، عبد اللہ بن المبارک بن واضح، ۷/۲۰۸

[2] .....سیر اعلام النبلاء، رقم ۳۲۱۹، دعلج بن احمد...الخ، ۱۲/۲۰۴تا۲۰۷ ملتقطًا

www.dawateislami.net

मुझ से पूछा : क्या बात है मैं तुम्हें परेशान देख रहा हूं ! मैं ने अपनी परेशानी बताई तो आप ने फ़रमाया : बे फ़िक्र हो कर खाओ, तुम्हारी ह़ाजत पूरी कर दी जाएगी। खाने से फ़ारिग़ होने के बाद आप ने मुझे दस हज़ार (10,000) दीनार (यानी सोने की अशरफ़ियां) दीं, मैं जब वहां से उठा तो मेरा दिल ख़ुशी से झूम रहा था। उन दीनारों से मैं ने माल की अदाएगी की, इस के बाद जब **अल्लाह** पाक ने मुझे माल अ़ता फ़रमाया तो मैं ह़ज़रते सय्यिदुना दालज رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से लिया हुवा माल उन्हें लौटाने के लिए ह़ाज़िर हुवा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम ! मेरी निय्यत इस को वापस लेने की नहीं थी, जाइए ! इस माल से अपने बच्चों के लिए सामान ख़रीद लीजिए। मैं ने कहा : ह़ज़रत ! आप को इतना माल कैसे ह़ासिल हुवा कि आप ने मुझे दस हज़ार (10,000) दीनार दे दिए ? आप ने फ़रमाया : **मैं क़ुरआन का ह़ाफ़िज़ बना, इल्मे ह़दीस ह़ासिल किया और साथ साथ कपड़ों की तिजारत भी करता रहा,** एक दिन एक ताजिर मेरे पास आया और पूछा : क्या आप का नाम दालज है ? मैं ने कहा : हां ! उस ने कहा : मैं अपना माल मुज़ारबत के त़ौर पर आप को देना चाहता हूं और फिर दस लाख (10,00,000) दिरहम मुझे दे कर कहा : हाथ खुला रख कर काम करें, माल ख़र्च करने की जो जगहें आप को मालूम हैं वहां माल ले जाइए। वोह ताजिर हर साल मेरे पास आता और मुझे दस लाख (10,00,000) दिरहम दे कर जाता, इस त़रह़ माल बढ़ता जा रहा था।

एक मरतबा उस ने कहा : मेरा समुन्दर में ब कसरत सफ़र रहता है, अगर मैं हलाक हो जाऊं तो येह माल आप का है इस शर्त़ पर कि आप इस से सदक़ा करेंगे, मसाजिद बनवाएंगे और इसे **ख़ैर के कामों में ख़र्च करेंगे।** इस लिए येह मालो दौलत मैं नेकी के कामों में ही ख़र्च करता हूं।

www.dawateislami.net

अल्लाह पाक ने मेरे हाथ में माल को बढ़ा दिया और जब तक मैं ज़िन्दा रहूं तुम मेरे इस मुआ़मले को छुपाए रखना।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ताजिरों की इस्लाम की ख़ातिर माली क़ुरबानियां

प्यारे इस्लामी भाइयो! हमारे अस्लाफ़ ताजिर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने जिस त़रह़ तब्लीग़े दीन में अपना अपना किरदार अदा किया वहीं अगर दीने इस्लाम की ख़ातिर माली क़ुरबानी का वक़्त आया तो इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या ने दिल खोल कर राहे ख़ुदा में अपना माल ख़र्च किया, तरग़ीब के लिए चन्द एक वाक़िआ़त ज़िक्र किए जाते हैं, आइए! मुलाह़ज़ा कीजिए।

क़ुल माल राहे ख़ुदा में क़ुरबान

इस्लाम के पहले ख़लीफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूरी ज़िन्दगी अपने आक़ा करीम, साह़िबे ख़ुल्क़े अ़ज़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इशारों पर कसीर मालो दौलत **अल्लाह** पाक की राह में ख़र्च किया बल्कि इस अ़ज़ीम काम में अपना ह़िस्सा शामिल करने के लिए शुरूअ़ दिन से ही मैदाने अ़मल में आ गए थे। रिवायत में आता है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिस दिन इस्लाम की आग़ोश में आए, उस वक़्त आप के पास चालीस हज़ार (40,000) दिरहम या दीनार थे, सारे के सारे राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दिए।[2]

ग़ज़वए तबूक के मौक़अ़ पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने माली ख़िदमत का ऐसा अ़ज़ीमुश्शान मुज़ाहरा फ़रमाया कि तारीख़ में इस की मिसाल

[1] ..... سیر اعلام النبلاء، رقم ۳۲۱۹، دعلج بن احمد...الخ، ۱۲/۲۰۶ ملخصًا

[2] ..... الاستیعاب، رقم ۱۶۵۱، عبد اللہ بن ابی قحافۃ، ۳/۹۴

www.dawateislami.net

नहीं मिलती, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना सारा का सारा माल इस्लाम और मुसलमानों पर निछावर कर दिया। रिवायत में है : जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने घर का सारा मालो मताअ़ बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर कर दिया तो रसूले मुख़्तार, दो आ़लम के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : घरवालों के लिए क्या छोड़ा है ? अ़र्ज़ किया : उन के लिए **अल्लाह** और उस का रसूल छोड़ आया हूं (मत़लब येह कि मेरे और मेरे अहलो अ़याल के लिए **अल्लाह** व रसूल काफ़ी हैं)।[1]

इक दिन रसूले पाक ने अस्ह़ाब से कहा
दें माल राहे ह़क़ में जो हों तुम में मालदार
ले आया अपने साथ वोह मर्दे वफ़ा सरिश्त
हर चीज़, जिस से चश्मे जहां में हो एतिबार
बोले हुज़ूर, चाहिए फ़िक्रे अ़याल भी
कहने लगा वोह इ़श्क़ो महब्बत का राज़दार
परवाने को चराग़ है, बुलबुल को फूल बस
सिद्दीक़ के लिए है ख़ुदा का रसूल बस[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नफ़ीस चीज़ की क़ुरबानी

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ़ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सख़ावत का येह आ़लम था कि राहे ख़ुदा में अपनी सब से ज़ियादा पसन्दीदा चीज़ें भी ख़र्च कर दिया करते थे। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मेरे वालिदे गिरामी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ़ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़िस्से में

[1] ..... ابو داود، کتاب الزکاۃ، باب الرخصۃ فی ذلک، ص ۲۷۴، حدیث: ۱۶۷۸
[2] ..... کلیات اقبال، بانگ درا، ۲۵۲-۲۵۳ ملتقطاً

www.dawateislami.net

ख़ैबर की कुछ ज़मीन आई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे नबवी में अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह ख़ैबर की ज़मीन मेरे हिस्से में आई है और इस से नफ़ीस माल मुझे कभी नहीं मिला, आप इरशाद फ़रमाएं कि मैं इस ज़मीन का क्या करूं ? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ उ़मर ! अगर तुम चाहो तो इसे अपनी मिल्कियत ही में रखो और इस के मनाफ़ेअ़ राहे ख़ुदा में सदक़ा कर दो । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस ज़मीन को ऐसे सदक़ा किया कि न तो उस को बेचा जाएगा, न ही हिबा किया जाएगा और न ही उस में विरासत जारी होगी बल्कि उस की आमदनी को फ़ुक़रा, ग़रीब रिश्तेदारों, मुसाफ़िरों, मेहमानों और राहे ख़ुदा में ख़र्च किया जाएगा और उस के मुतवल्ली को इजाज़त है कि उस में से अपनी ज़ात या दोस्तों पर जाइज़ त़रीक़े से ख़र्च करे ।[1]

जन्नत ख़रीदने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शाने सख़ावत के तो क्या कहने ! इन की दरिया दिली से कौन वाक़िफ़ नहीं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी मुबारक ज़िन्दगी में ताजदारे नबुव्वत, शहनशाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दो मरतबा जन्नत ख़रीदी, एक मरतबा (पानी का कुंवां) **बीरे रूमा** (यहूदी से ख़रीद कर मुसलमानों के पानी पीने के लिये) वक़्फ़ कर के और दूसरी बार **जैशे उ़सरत** के मौक़अ़ पर ।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर था और हुज़ूरे अकरम, रसूले मोह़तरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को जैशे उ़सरत (यानी ग़ज़वए

[1] ..... بخاری، کتاب الوصایا، باب الوقف کیف یکتب؟، ص۷۲۰، حدیث: ۲۷۷۲

[2] ..... مستدرک، کتاب معرفة الصحابة، باب اشتری عثمان الجنة مرتین، ۴/۶۸، حدیث: ۴۶۲۶

www.dawateislami.net

तबूक) की तय्यारी के लिए तरग़ीब इरशाद फ़रमा रहे थे। हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उठ कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पालान और दीगर सामान समेत सौ (100) ऊंट मेरे ज़िम्मे हैं। हुज़ूर सरापा नूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से फिर तरग़ीबन फ़रमाया। तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दोबारा खड़े हुवे और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं तमाम सामान समेत दो सौ (200) ऊंट ह़ाज़िर करने की ज़िम्मेदारी लेता हूं। दो जहां के सुल्त़ान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से फिर तरग़ीबन इरशाद फ़रमाया तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं मअ़ सामान तीन सौ (300) ऊंट अपने ज़िम्मे क़बूल करता हूं।

रावी फ़रमाते हैं : मैं ने देखा कि हुज़ूरे अन्वर, मदीने के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह सुन कर मिम्बरे मुनव्वर से नीचे तशरीफ़ ला कर दो मरतबा फ़रमाया : आज से उ़स्मान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) जो कुछ करे इस पर मुवाख़ज़ा (यानी पूछगछ) नहीं।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की सख़ावत की चन्द झल्कियां

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुल्ला अ़ली क़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के राहे ख़ुदा में ख़र्च की चन्द झल्कियां बयान करते हैं : (1) सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते त़य्यिबा में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक बार चार हज़ार (4000) दीनार ख़ैरात किए (2) एक बार चालीस हज़ार (40,000) दीनार राहे ख़ुदा में दिए (3) एक बार पांच सौ (500) घोड़े मुजाहिदों को दिए (4) एक बार पन्दरह सौ (1500) ऊंट राहे ख़ुदा में दिए (5) वफ़ात के

[1] ترمذی، ابو اب المناقب عن رسول اللہ، باب مناقب عثمان بن عفان، ص ۸۴۲، حدیث: ۳۷۰۹

www.dawateislami.net

वक़्त पचास हज़ार (50,000) दीनार ख़ैरात करने की वसिय्यत की (6) एक बार आप बीमार हुवे तो अपना तिहाई माल ख़ैरात करने की वसिय्यत की, मगर बाद में आराम हो गया तो वोह माल ख़ुद ही ख़ैरात कर दिया (7) एक बार सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से कहा कि जो जंगे बद्र में शरीक थे, उन्हें फ़ी कस चार सौ (400) दीनार मैं दूंगा (8) उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ की ख़िदमत में एक बाग़ पेश किया (जो चार लाख (4,00,000) में फ़रोख़्त हुवा।) (9) एक बार एक दिन में डेढ़ लाख (यानी 1,50,000) दीनार ख़ैरात किये, रात को हिसाब लगाया फिर बोले कि मेरा सारा माल मुहाजिरीनो अन्सार पर सदक़ा है हत्ताकि फ़रमाया मेरी क़मीज़ फुलां को और मेरा इमामा फुलां को। हज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवे और अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अब्दुर्रहमान के सदक़ात क़बूल हैं, उन्हें बे हिसाब जन्नती होने की ख़बर दे दीजिए।[1]

तू बे हिसाब बख़्श कि हैं बे शुमार जुर्म
देता हूं वासिता तुझे शाहे हिजाज़ का [2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

एक हज़ार ग़ुलामों की आमदनी

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अपने जीते जी जन्नत की ख़ुश ख़बरी पाने वाले मश्हूर सहाबिए रसूल हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अव्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में आता है कि आप भी इन्तिहाई कामयाब ताजिर थे, एक बार जब उन से उन की कामयाबी का राज़ पूछा गया तो आप ने

[1] ..... مرقاۃ المفاتیح، کتاب المناقب، باب مناقب العشرۃ، ۱۱/۲۸۲، تحت الحدیث: ۶۱۳۰ بتقدم وتاخر

[2] .....ज़ौक़े नात, स. 18

www.dawateislami.net

फ़रमाया : मैं ने कभी बिन देखे कोई चीज़ ख़रीदी न कभी कम नफ़्अ़ को रद किया, **अल्लाह** पाक जिसे चाहे बरकत से नवाज़ देता है ।[1]

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के एक हज़ार (1000) गुलाम थे जो मेहनत व मज़दूरी कर के आप को कसीर रक़म दिया करते थे लेकिन उस में से एक दिरहम भी आप के घर में दाख़िल न होता बल्कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तमाम का तमाम माल सदक़ा कर दिया करते थे । मन्क़ूल है कि एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना एक घर छे लाख (6,00,000) में फ़रोख़्त किया तो आप से अ़र्ज़ की गई : ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! आप को तो नुक़्सान हो गया । तो आप ने इरशाद फ़रमाया : हरगिज़ नहीं, ख़ुदा की क़सम ! अ़न क़रीब तुम जान लोगे कि मैं ने नुक़्सान नहीं उठाया क्यूंकि मैं ने येह माल राहे ख़ुदा में दे दिया है ।[2]

मैं सब दौलत रहे ह़क़ में लुटा दूं
शहा ऐसा मुझे जज़्बा अ़ता हो[3]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ताजिर दीन की ख़िदमत कैसे कर सकता है ?

प्यारे इस्लामी भाइयो ! एक ताजिर के लिए दीन की ख़िदमत के कई मवाक़ेअ़ हो सकते हैं जिन में वोह शामिल हो कर मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में अपना किरदार अदा कर सकता है । मुख़्तसरन चन्द मदनी फूल पेशे ख़िदमत हैं :

[1] ..... الاستیعاب، رقم ۸۱۱، الزبیر بن العوام الاسدی، ۲/ ۹۲

[2] ..... عمدۃ القاری کتاب الخمس، باب برکۃ الغازی...الخ، ۱۰/ ۲۶۴، تحت الحدیث: ۳۱۲۹ ملتقطًا

[3].....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 316

www.dawateislami.net

(1) ताजिर को चाहिए कि शरीअ़त के मुत़ाबिक़ ज़कात की मुकम्मल अदाएगी करे। अपने रिश्तेदारों अ़ज़ीज़ों को देने के साथ साथ आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दावते इस्लामी हिन्द के दीनी इदारों मसलन **जामिआ़तुल मदीना**[1] और **मदारिसुल मदीना**[2] की भी ख़िदमत करे।

(2) इसी त़रह़ माहाना की बुन्याद पर भी ह़स्बे तौफ़ीक़ सदक़ा ओ ख़ैरात का सिलसिला जारी रखे।

(3) अपनी दुकान, कारख़ाने और दफ़्तर (Office) वग़ैरा में दावते इस्लामी हिन्द के मदनी **अ़त़िय्यात बॉक्स**[3] लगाए।

(4) मार्केट वग़ैरा में **डोनेशन सेल**[4] लगवाने का भी एहतिमाम करे।

1 .....दावते इस्लामी हिन्द के कसीर शोबाजात में से जामिअ़तुल मदीना एक ऐसा शोबा है जिस में आ़लिम बनाने वाला कोर्स दर्से निज़ामी बिल्कुल मुफ़्त करवाया जाता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस वक़्त मुल्को बैरूने मुल्क 616 जामिआ़तुल मदीना इस दीनी काम में मसरूफ़े अ़मल हैं।

2 ....मद्रसतुल मदीना दावते इस्लामी हिन्द का वोह शोबा है जिस के अन्दर हिफ़्ज़ो नाज़िरा की मुफ़्त तालीम दी जाती है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हज़ारों मदनी मुन्ने और मदनी मुन्नियां इस से मुस्तफ़ीज़ हो रहे हैं। मुल्को बैरूने मुल्क में 3189 मद्रसतुल मदीना लिलबनीन और लिलबनात ख़िदमते दीन में अपना किरदार अदा कर रहे हैं।

3 .....अपनी दुकान, कारख़ाने, क्लीनिक, हस्पताल वग़ैरा में मदनी अ़त़िय्यात बॉक्स रखवाने के लिए अपना नाम, दुकान का नाम, फ़ोन नम्बर, मुकम्मल पोस्टल एड्रेस इस नम्बर (+91) 8984376252 भेजें या (maktabboxhind@gmail.com) पर मेल फ़रमाएं।

4 .....आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दावते इस्लामी हिन्द अपने मदनी कामों की ख़ात़िर शरीअ़त और तन्ज़ीम के दाएरे में रहते हुवे मदनी अ़त़िय्यात जम्अ़ करने के लिए जगह जगह मुस्तक़िल डोनेशन सेल / डोनेशन काउन्टर (मदनी बस्ता / झोली लगाने का एहतिमाम करती है। इस मदनी काम के तअ़ल्लुक़ से मालूमात / रहनुमाई / शिकायात / मसाइल के लिए इस पर राबित़ा फ़रमाएं : Mo. (+91) 8984376252 / E mail : mahind.complaint@gmail.com

www.dawateislami.net

(5) रोज़ाना की बुन्याद पर दो मदनी दर्स में मश्ग़ूलिय्यत रखे। एक घर दर्स और एक दुकान, कारख़ाने, दफ़्तर या मार्केट वग़ैरा में जहां सहूलत हो। इन में से एक दर्स ख़ुद देने का शरफ़ ह़ासिल कीजिए اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े दीन का भी सवाब हाथ आएगा।

(6) हफ़्ते में एक दिन हफ़्तावार मदनी ह़ल्क़े में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल की जाए। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से ख़ूब ख़ूब इल्मे दीन सीखने का मौक़अ़ मिलेगा और दूसरों तक पहुंचाने में भी मदद मिलेगी।

(7) हर रोज़ मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में पढ़ने पढ़ाने का एहतिमाम करे। (अपनी दुकान, दफ़्तर, फ़ेक्ट्री वग़ैरा में अपने तह़्त काम करने वालों को भी मद्रसतुल मदीना बालिग़ान के ज़रीए दुरुस्त क़ुरआने करीम पढ़ाया जाए तो सवाब का अ़ज़ीम ख़ज़ाना ह़ासिल किया जा सकता है।) सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़ुरआने पाक सीख कर उसे सिखाने वाले को बेहतरीन शख़्स क़रार दिया है।[1]

(8) दावते इस्लामी हिन्द के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ और हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरे में शिर्कत को अपना मामूल बनाए इस की बरकत से जहां ढेरों बरकतें नसीब होंगी वहीं आप का इजतिमाअ़ व मदनी मुज़ाकरे में आना कई अफ़राद के लिए बाइ़से तरग़ीब होगा। मज़ीद येह कि नेकी की दावत की निय्यत से ब वक़्ते इजतिमाअ़ दुकान व फ़ेक्ट्री के बाहर पेना फ़्लेक्स (Panaflex) पर येह तह़रीर भी लिख दीजिए।

[1] .....بخاری، کتاب فضائل القرآن، باب خیر کم من تعلم القرآن، ص۱۲۹۹، حدیث: ۵۰۲۷ مفھومًا

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

हर जुमेरात बाद नमाज़े मग़रिब दावते इस्लामी हिन्द का हफ़्तावार सुन्नतों भरा इजतिमाअ़ (यहां अपने शहर के क़रीबी हफ़्तावार इजतिमाअ़ की जगह का नाम लिखें मसलन फ़ैज़ाने मदीना, मिरज़ापुर अहमदाबाद) में होता है, इस लिए हर जुमेरात को दुकान नमाज़े अ़स्र के बाद (तक़रीबन 06 : 00) बजे बन्द हो जाया करेगी, आप भी शिर्कत की सआ़दत हासिल कर के ढेरों नेकियां हासिल कीजिए।

(9) महीने में कम अज़ कम एक बार अपनी दुकान वग़ैरा पर ख़त्मे ग्यारहवीं शरीफ़ का इन्तिज़ाम भी करे जिस में तिलावत, नात, मुबल्लिगे़ दावते इस्लामी हिन्द का मुख़्तसर सुन्नतों भरा बयान, ख़त्म शरीफ़, दुआ़ और सलातो सलाम का सिलसिला हो। मज़ीद येह कि रबीउ़ल अव्वल के मुबारक महीने में इजतिमाए़ मीलाद भी किया जाए। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नेकी की दावत की धूमें मच जाएंगी।

(10) ख़िदमते दीन का बेहतरीन त़रीक़ा इशाअ़ते इ़ल्मे दीन भी है लिहाज़ा मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा कुतुबो रसाइल ख़रीद कर के ख़ुद भी पढ़िए और दूसरों को भी तरग़ीब दिलाइए और तह़ाइफ़ भी दीजिए। रग़बत दिलाने के लिए अपने घर, दफ़्तर, दुकान वग़ैरा में किसी नुमायां जगह पर रसाइल रेक[1] लगाइए।

(11) हर 12 माह में 1 माह और हर माह कम से कम 3 दिन आ़शिक़ाने रसूल के साथ क़ाफ़िले में सफ़र की सआ़दत हासिल करे।

(12) हो सके तो अपने तह़्त काम करने वालों को भी बारी बारी क़ाफ़िले में सफ़र और फ़ैज़ाने नमाज़ कोर्स वग़ैरा करवाए तो येह भी इ़ल्मे दीन सीखने की सआ़दत पा सकेंगे।

1.....रसाइल रेक हासिल करने के लिए मक्तबतुल मदीना से राबित़ा कीजिए।

(13) क़ाफ़िलों में सफ़र और मुख़्तलिफ़ मदनी कोर्सिज़ करने वाले ग़रीब इस्लामी भाइयों की माली मुआ़वनत करे यानी अपने पल्ले से क़ाफ़िलों और मदनी कोर्सिज़ वग़ैरा के अख़राजात पेश करे।

(14) दावते इस्लामी हिन्द की मजलिसे असासाजात व खुद्दामुल मसाजिद के साथ मिल कर ख़ाली प्लॉट्स में मसाजिद / मदारिसुल मदीना व जामिआ़तुल मदीना / मदनी मराकिज़ फ़ैज़ाने मदीना की तामीरात में बढ़ चढ़ कर अपना माली तआ़वुन शामिल करे।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मजलिसे ताजिरान (दावते इस्लामी हिन्द) के क़ियाम का मक़सद

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ताजिर और तिजारत की अहम्मिय्यत किसी से ढकी छुपी नहीं है चूंकि येह शोबा हर मुल्को मिल्लत की मईशत में रीढ़ की हड्डी की हैसिय्यत रखता है, इस लिए ताजिरों का अस्रो रुसूख़ भी मुआ़शरे में आ़म आदमी से बहुत ज़ियादा होता है। और अगर येही अस्रो रुसूख़ दीन की ख़िदमत के लिए इस्तिमाल हो तो एक आ़म आदमी की नेकी की दावत की ब निस्बत ताजिर की नेकी की दावत के असरात भी नुमायां होंगे। इस अहम्मिय्यत के पेशे नज़र आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दावते इस्लामी हिन्द ने इस शोबे में नेकी की दावत को आ़म करने के लिए **मजलिसे ताजिरान** का क़ियाम किया ताकि इस के ज़रीए ताजिरान तक नेकी की दावत पहुंचे और ताजिर इस्लामी भाई भी अ़मली तौ़र पर अपनी दीनी ख़िदमात पेश कर सकें।

मजलिसे ताजिरान के **मदनी फूल** मुरत्तब किए गए हैं ताकि इस शोबे के ज़िम्मेदारान और वाबस्ता इस्लामी भाई मदनी मर्कज़ के दिए हुवे त़रीक़ेकार के मुत़ाबिक़ इस शोबे का मदनी काम शरीअ़त और तन्ज़ीम के दाएरे में रह कर कर सकें।

www.dawateislami.net

"ग़मे माल से बचाना मदनी मदीने वाले" के 25 हुरूफ़ की निस्बत से मजलिसे ताजिरान के पच्चीस मदनी फूल

फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه : दावते इस्लामी का 99.99 फ़ीसद मदनी काम इनफ़िरादी कोशिश से मुमकिन है।

(1) **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ यानी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।[1] इस लिए मजलिसे ताजिरान का हर ज़िम्मेदार अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़ताकर्दा "**72 नेक काम**" में से "नेक काम नम्बर 1" पर अ़मल करते हुवे येह निय्यत करता रहे कि : मैं **अल्लाह** पाक की रिज़ा और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशनूदी के लिए दावते इस्लामी हिन्द के शोबे **मजलिसे ताजिरान** का मदनी काम मदनी मर्कज़ के त़रीक़ेकार के मुत़ाबिक़ करूंगा, اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ

(2) मजलिसे ताजिरान का मदनी काम ट्रेड सेन्टर्ज़, स्टॉक एक्सचेन्ज, चेम्बर ऑफ़ कॉमर्स एन्ड इन्डस्ट्री, सब्ज़ी व फ़्रूट मन्डी, ग़ल्ला मन्डी, जवेलरी मार्केट, शूज़ एन्ड क्लोथ मार्केट, किरयाना एन्ड जनरल स्टोर्ज़, केश एन्ड केरी स्टोर्ज़, ट्रेड एन्ड मार्ट, मुख़्तलिफ़ मिल्ज़ और फ़ेक्ट्रीज़, लोकल एन्ड मल्टी नेशनल कम्पनीज़, प्रोपर्टी एन्ड कन्स्ट्रक्शन, ऑटो व्हीकल प्लान्ट्स, गुड्स एन्ड पेसेन्जर ट्रान्सपोर्ट, ऐर लाइन्ज़ वग़ैरा तमाम शोबाजात के छोटे बड़े तमाम ताजिरों को नेकी की दावत देना और उन तक आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दावते इस्लामी हिन्द के मदनी पैग़ाम को आ़म करना और उन्हें दावते इस्लामी हिन्द से

[1] ..... معجم کبیر، ۳/۵۲۵، حدیث: ۵۸۰۹

www.dawateislami.net

वाबस्ता करते हुवे इस मदनी मक़्सद "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ" के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने का मदनी ज़ेह्न देना है।

(3) मजलिसे ताजिरान के तमाम इस्लामी भाई रिश्वत, तअ़ल्लुक़ात और मुदाहनत के शरई मसाइल सीखें, इस के लिए मक्तबतुल मदीना की कुतुबो रसाइल का मुत़ालआ़ मुफ़ीद है मसलन : फ़ैज़ाने सुन्नत सफ़ह़ा 539 ता सफ़ह़ा 554 ❀ कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब सफ़ह़ा 428 ता 449 ❀ बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम, ह़िस्सा 16 ❀ नीज़ फ़तावा रज़विय्या जिल्द 24 सफ़ह़ा 311 ता सफ़ह़ा 331 और "दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत" से ज़रूरतन शरई रहनुमाई भी लेते रहें।

(4) मजलिस के ज़िम्मेदारान इस शोबे की शख़्सिय्यात से पेशगी वक़्त ले कर मुलाक़ात करें ❀ बेहतर येह है कि मुलाक़ात के लिए दो तीन इस्लामी भाई मिल कर जाएं, मुलाक़ात की इब्तिदा में तआ़रुफ़ यानी तन्ज़ीमी ज़िम्मेदारी ज़रूरतन अपनी तालीमी क़ाबिलिय्यत (Educational Qualification) बयान करना मुफ़ीद है ❀ दौराने मुलाक़ात शख़्सिय्यात को दावते इस्लामी हिन्द के मदनी कामों और इस के चन्द शोबाजात मसलन मदनी चैनल, मजलिसे शोबए तालीम, मजलिसे आई टी, दावते इस्लामी हिन्द की वेब साइट (www.dawateislamihind.net), मजलिसे ख़ुसूसी इस्लामी भाई, मजलिसे इस्लाह़ बराए क़ैदियान वग़ैरा का तआ़रुफ़ करवाएं, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की दीनी ख़िदमात से आगाह करें और मौक़अ़ पाते ही अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुरीद या त़ालिब बनाएं।

www.dawateislami.net

❀ दौराने गुफ़्तगू उन की हर बात पर न हां में हां मिलाएं न सर हिला कर ताईद करें, इख़्तिलाफ़ी मसाइल, फ़ुज़ूल गुफ़्तगू और सियासी मुआ़मलात पर गुफ़्तगू से मुकम्मल इजतिनाब करें । इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे ख़ौफ़े ख़ुदा व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा, इख़्लास व अख़्लाक़े ह़सना से मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्तगू करें नीज़ अम्बिया (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) व सह़ाबा व औलिया (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) की इस्लाम की ख़ातिर क़ुरबानियां और इस्लाहे़ उम्मत के लिए दावते इस्लामी हिन्द और बानिए दावते इस्लामी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का किरदारे बा सफ़ा जैसे उ़न्वानात पर ही गुफ़्तगू करें । अपना ज़ाती काम शख़्सिय्यात से हरगिज़ न कहा जाए । मुलाक़ात मुख़्तसर (5 से 12 मिनट) हो, अगर शख़्सिय्यत दिलचस्पी ज़ाहिर करे तो मज़ीद वक़्त बढ़ा दें और नुमायां शख़्सिय्यात से तह़रीरी या वीडियो तअस्सुरात ह़ासिल कर के मअ़ तफ़्सीलात मजलिसे मदनी चैनल को इरसाल / ई मेल (Email) / वॉट्सएप (WhatsApp) फ़रमा दें ❀ ह़दीसे पाक में है تَهَادَوْا تَحَابُّوْا यानी एक दूसरे को तोह़फ़ा दो, आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी ।[1] पर अ़मल की निय्यत से इख़्तितामे मुलाक़ात पर शख़्सिय्यात को ज़ाती तौ़र पर ह़स्बे इस्तित़ाअ़त और मुख़य्यर इस्लामी भाइयों से अख़राजात ले कर मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ कुतुबो रसाइल वग़ैरा भी तोह़फ़तन पेश करें । जो रिसाला / किताब पेश करें, उसे अपने पास डायरी में नोट कर लें ताकि आयिन्दा मुलाक़ात में कोई और किताब / रिसाला पेश की जा सके ❀ मज़बूत़ और मुसलसल राबित़ा हमारी मजलिस के मदनी काम की जान है, जिन से मुलाक़ात हो, उन का नाम और फ़ोन नम्बर (Phone number), वॉट्सएप नम्बर (WhatsApp number) वग़ैरा ह़ासिल कर के फ़ेहरिस्त मुरत्तब करें

[1] ..... موطا امام مالك، كتاب حسن الخلق، باب ماجاء في المهاجرة، ص ۴۸۳، حديث: ۱۷۳۱

www.dawateislami.net

और बिल मुशाफ़ा, SMS, E-mail ज़रूरतन फ़ोन के ज़रीए मुसलसल राबिते में रहें। ताजिरान का ई मेल एड्रेस (E-mail address) मजलिसे आई टी को दें ताकि वोह मदनी फूल रवाना करती रहे, या **मजलिसे सोश्यल मीडिया** (Majlis Social Media) को उन का वॉट्सएप नम्बर दे दीजिए ताकि इस ज़रीए से दावते इस्लामी हिन्द की **मुख़्तलिफ़ अपडेट्स** (Updates) उन तक पहुंचती रहें। ❀ ताजिरान की मुकम्मल मालूमात मसलन नाम, पोस्टल एड्रेस, फ़ोन नम्बर, वॉट्सएप नम्बर वग़ैरा अपने निगरान और निगराने मजलिसे ताजिरान (हिन्द) को भी पेश करें ताकि मदनी मर्कज़ की तरफ़ से ज़रूरतन उन से फ़ौरी राबिता किया जा सके। याद रहे ! साहिबे मन्सब शख़्सिय्यात की दावते ख़ास न ख़ुद और न ही किसी के ज़रीए करें कि येह बाज़ सूरतों में नाजाइज़ है। येही हुक्म इस्लामी कुतुबो रसाइल के इलावा तहाइफ़ का है।

(5) अहम ताजिरान को दावते इस्लामी हिन्द के मदनी मराकिज़, जामिआतुल मदीना, मदारिसुल मदीना, दारुल मदीना, दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत, हफ़्तावार इजतिमाआत में आने और क़ाफ़िलों में सफ़र की भरपूर दावत दें और इन मवाक़ेअ की रेकॉर्डिंग (Recording) कर के हाथों हाथ मजलिसे मदनी चैनल को रवाना करें।

❀ हफ़्तावार इजतिमाअ में बस्ते के लिए पेना फ़्लेक्स (PanaFlex) इस अन्दाज़ से बनवाए जाएं :

ट्रेड सेन्टर्ज़, बाजारों, मार्केटों इन्डस्ट्रीज़ और फ़ेक्ट्रीज़ में दावते इस्लामी हिन्द के मदनी काम के लिए यहां राबिता फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

❁ ताजिरान के हां बीमारी, परेशानी, फ़ौतगी के मवाक़ेअ़ पर ग़मख़्वारी (इयादत व ताज़ियत) करें मसलन तावीज़ात व मक्तूबाते अ़त्तारिया, फ़ौतगी पर गुस्ले मय्यित, जनाज़ा व तदफ़ीन और सोइम, चेहलम व बरसी पर इजतिमाए ज़िक्रो नात और ईसाले सवाब की तराकीब वग़ैरा।

(6) रबीउ़ल अव्वल, ग्यारहवीं शरीफ़, रमज़ानुल मुबारक और सफ़रे ह़ज व सफ़रे मदीना वग़ैरा मौक़अ़ की मुनासबत से ताजिरान के घरों पर और मार्केटों में वक़्तन फ़ वक़्तन इजतिमाए ज़िक्रो नात कर के नेकी की दावत की ख़ूब ख़ूब धूमें मचाएं। (**इजतिमाए ज़िक्रो नात का जदवल : तिलावत :** 5 मिनट, नात **:** 5 मिनट, बयान **:** 19 ता 26 मिनट, दुआ़ **:** 5 मिनट, सलाम **:** 3 मिनट, मुलाक़ात व इनफ़िरादी कोशिश **:** 41 मिनट) मेज़बान शख़्सिय्यत का पहले से ही ज़ेह्न बना कर तक़्सीमे रसाइल (मक्तबतुल मदीना की जारीकर्दा कुतुबो रसाइल) करें।

(7) हर मार्केट में बुध के दिन अ़लाक़ाई दौरा करें।

(8) हर मार्केट की ज़ैली मुशावरत में निगरान, क़ाफ़िला ज़िम्मेदार व नेक काम ज़िम्मेदार का तअ़य्युन करें।

(9) हर डिवीज़न से हर माह कम अज़ कम (मजलिसे ताजिरान के) 4 क़ाफ़िलें सफ़र करवाएं।

(10) मार्केट की मसाजिद में हर माह ताजिरान के क़ाफ़िलों को ठहराएं नीज़ मार्केट की दुकानों में **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** लगाएं।

(11) मार्केट की दुकानों पर मुख़्तलिफ़ मदनी कामों को नाफ़िज़ करें और ताजिरों में सुन्नतों की धूमें मचाएं मसलन क़ाफ़िला, नेक काम, चौक दर्स, हफ़्तावार अ़लाक़ाई दौरा, मदनी अ़त़िय्यात बॉक्स, मद्रसतुल मदीना बालिग़ान, तक़्सीमे रसाइल, मदनी ह़ल्क़े, ताजिर इजतिमाअ़ वग़ैरा।

(12) किसी भी ताजिर के घर में मदनी माहोल बनाने का एक त़रीक़ा येह भी है कि उन के घर की इस्लामी बहनों को इस्लामी बहनों के इजतिमाअ़ में शिर्कत करवाएं।

(13) मजलिसे ताजिरान के ज़िम्मेदारान हर माह ताजिरान को क़ाफ़िलों के लिए तय्यार करें और उन के क़ाफ़िले, मजलिसे क़ाफ़िला के मश्वरे से अहम शख़्सय्यात व ताजिरान के पोश एरियाज़ (सोसाइटीज़) और मार्केट की मेन मसाजिद (Main Mosques) वग़ैरा में ठहराए जाएं और दीगर शख़्सय्यात को आ़शिक़ाने रसूल से मुलाक़ात करवाने और उन की ख़ैर ख़्वाही के लिए मस्जिद में लाया जाए। इन क़ाफ़िलों में निगराने डिवीज़न मुशावरत / निगराने काबीना और दीगर अहम तन्ज़ीमी ज़िम्मेदारान का सफ़र ज़ियादा मुफ़ीद है।

(14) ताजिरान को मुख़्तलिफ़ मदनी कोर्सिज़ मसलन फ़ैज़ाने नमाज़ कोर्स, 12 मदनी काम कोर्स, इस्लाहे़ आमाल कोर्स, मदनी तरबियती कोर्स वग़ैरा करने की तरग़ीब दिलाएं। अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिए रोज़ाना ग़ौरो फ़िक्र करते हुवे नेक काम का रिसाला पुर करने और हर मदनी माह की यकुम तारीख़ को अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिए उ़म्र भर में यकमुश्त 12 माह, हर 12 माह में 1 माह और हर माह कम अज़ कम 3 दिन जदवल के मुत़ाबिक़ क़ाफ़िले में सफ़र करवाने की कोशिश करते रहें।

(15) **क़ाफ़िला, नेक काम, मुख़्तलिफ़ मदनी कोर्सिज़ के माहाना अहदाफ़ :** मजलिस के हर सत़ह़ के ज़िम्मेदारान अपने निगरान के मश्वरे से क़ाफ़िलों, नेक काम, फ़ैज़ाने नमाज़ कोर्स, 12 मदनी काम कोर्स, इस्लाहे़ आमाल कोर्स, मदनी तरबियती कोर्स के माहाना अहदाफ़ त़ै करें और इस के लिए भरपूर कोशिश भी फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

(16) ज़िम्मेदारान की तक़र्रुरी का अन्दाज़ :

#	सत्ह़	ज़िम्मेदार	#	सत्ह़	ज़िम्मेदार
1	ज़ैली (मार्केट)	ज़ैली सत्ह़ पर 3 रुक्नी मजलिस	5	रीजन	रीजन ज़िम्मेदार
2	डिवीज़न	डिवीज़न सत्ह़ पर 3 रुक्नी मजलिस	6	मुल्क	निगराने मजलिस, मजलिसे ताजिरान
3	काबीना	काबीना सत्ह़ पर 3 रुक्नी मजलिस (निगराने मजलिस रुक्ने काबीना होगा)	7	मर्कज़ी मजलिसे शूरा	रुक्ने शूरा मजलिसे ताजिरान
4	ज़ोन	ज़ोनल ज़िम्मेदार			

❁ ज़ैली (मार्केट), डिवीज़न और काबीना सत्ह़ पर 3-3 रुक्नी मजलिस होगी। काबीना सत्ह़ की मजलिस का निगरान रुक्ने काबीना होगा।

❁ रीजन ज़िम्मेदार हिन्द सत्ह़ की मजलिस का रुक्न है।

❁ बैरूने मुल्क के ज़िम्मेदारान, निगराने मजलिसे बैरूने मुल्क (रुक्ने शूरा) की इजाज़त से इस शोबे में किसी भी सत्ह़ पर ज़िम्मेदार मुक़र्रर करें।

❁ याद रहे ! किसी भी सत्ह़ के अराकीन व निगरान की तक़र्रुरी के लिए मुतअ़ल्लिक़ा सत्ह़ के निगरान की इजाज़त ज़रूरी है।

(अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हर मजलिस में मदनी इस्लामी भाई के होने को पसन्द फ़रमाते हैं।)

(17) मदनी मश्वरों की तारीख़ व मदनी फूल :

#	तारीख़	मदनी मश्वरा लेने वाले	सत्ह़	शुरका	मदनी मश्वरे के मदनी फूल
1	2	निगराने डिवीज़न मुशावरत / डिवीज़न ज़िम्मेदार	डिवीज़न	ज़ैली सत्ह़ की 3 रुक्नी मजलिस	इनफ़िरादी व माहाना कारकर्दगी, पेशगी जदवल व जदवल कारकर्दगी, ज़िम्मेदारान के तक़र्रुर, तरक़्क़ी व तनज़्ज़ुली का जाइज़ा, अगले माह के अहदाफ़ वग़ैरा
2	3	निगराने काबीना / काबीना ज़िम्मेदार	काबीना	काबीना सत्ह़ की 3 रुक्नी मजलिस	//
3	4	ज़ोनल निगरान / ज़ोनल ज़िम्मेदार	ज़ोन	काबीना ज़िम्मेदारान (बेहतर येह है कि हर काबीना की 3 रुक्नी मजलिस शिर्कत करे)	//
4	5	रीजन ज़िम्मेदार / निगराने मजलिस	रीजन	ज़ोनल ज़िम्मेदारान	//
5	6	रुक्ने शूरा / निगराने मजलिस	मुल्क	रीजन ज़िम्मेदारान	//

वज़ाहत : रुक्ने शूरा / निगराने मजलिस, हिन्द सत्ह़ की मजलिस (रीजन ज़िम्मेदारान) का हर माह मदनी मश्वरा फ़रमाएं, एक माह बिल मुशाफ़ा और एक माह ब ज़रीअए इन्टरनेट । ❀ मामूल (Routine) से हट कर होने वाले शोबाजात के मदनी मश्वरों या ज़िम्मेदारान के सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त के लिए अव्वलन "**इजाज़त नामा**" मुकम्मल पुर कर के तैशुदा त़रीक़े कार के मुत़ाबिक़ मुतअ़ल्लिक़ा ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाना होगा । (मज़ीद वज़ाह़त के लिए "इजाज़त नामा बराए मदनी मश्वरा / ज़िम्मेदारान का सुन्नतों भरा इजतिमाअ़" के मदनी फूल बग़ौर मुलाह़ज़ा

www.dawateislami.net

कर लीजिए, येह इजाज़त नामा हिन्द मुशावरत की ऑफ़िस से मेल हो चुका है, ब वक़्ते ज़रूरत दोबारा ह़ासिल किया जा सकता है ।)

कारकर्दगी जम्अ़ करवाने की तारीख़ें : ज़ैली (मार्केट) : 1 / डिवीज़न : 2 / काबीना : 3 / ज़ोन : 4 / रीजन : 5 / मुल्क : 7

(18) मदनी मश्वरों की कसरत से बचने के लिए मुक़र्रर कर्दा सत़ह़ के इ़लावा किसी और सत़ह़ का मदनी मश्वरा लेने के लिए मुतअ़ल्लिक़ा निगरान से इजाज़त ज़रूरी है। ❀ जब बड़ी सत़ह़ के ज़िम्मेदार दीगर सत़ह़ के ज़िम्मेदारान का मदनी मश्वरा कर लें तो उस माह उन का माहाना मदनी मश्वरा नहीं होगा ❀ इसी त़रह़ जिस माह निगराने काबीना / मुशावरत शोबे के ज़िम्मेदारान का मदनी मश्वरा फ़रमाएंगे, उस माह भी शोबा ज़िम्मेदारान माहाना मदनी मश्वरा नहीं करेंगे । (शोबे के मदनी काम को मज़बूत़ और मुनज़्ज़म करने के लिए वक़्तन फ़ वक़्तन अपने निगरान से शोबे के इस्लामी भाइयों का मदनी मश्वरा करवाना मुफ़ीद है) ।

(19) हिन्द सत़ह़ के ज़िम्मेदार हर ईसवी माह की सात तारीख़ तक कारकर्दगी हिन्द मुशावरत की कारकर्दगी की ऑफ़िस / शोबे की आ़लमी मजलिस की ऑफ़िस को मेल (Mail) / वॉट्सएप (WhatsApp) कर दें।

(**याद रहे !** कारकर्दगी मदनी मश्वरे से मशरूत़ नहीं, अगर किसी वज्ह से मदनी मश्वरा न हो सके तब भी मुक़र्ररा तारीख़ पर अपने निगरान को कारकर्दगी पेश कर दें ।)

(20) हर ज़िम्मेदार हर माह का पेशगी जदवल ईसवी माह की **19 ता 26 तारीख़** तक अपने निगरान से मन्ज़ूर करवाए, फिर इस के मुत़ाबिक़ पेशगी इत्तिलाअ़ के साथ अपने जदवल पर अ़मल करे और महीना मुकम्मल होने के बाद यकुम ता 3 तारीख़ कारकर्दगी जदवल अपने निगरान को पेश करे ।

www.dawateislami.net

(21) मुतअ़ल्लिक़ा निगरान की मुशावरत से शोबा ज़िम्मेदारान मंगल के रोज़ ज़रूरतन एक दो घन्टे के लिए तह़रीरी काम करें, जिस में अपने पिछले हफ़्ते की कारकर्दगी का जाइज़ा और आयिन्दा हफ़्ते के जदवल की तय्यारी वग़ैरा शामिल हो।

(22) अपने निगरान से मरबूत़ रहें। उन्हें अपनी कारकर्दगी से आगाह रखें और उन से मश्वरा करते रहें। जो निगरान से जितना ज़ियादा मरबूत़ रहेगा वोह उतना ही मज़बूत़ होता जाएगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

(23) मुतअ़ल्लिक़ा रुक्ने शूरा और निगराने काबीना की इजाज़त से वक़्तन फ़ वक़्तन अपनी मजलिस के ज़िम्मेदारान के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ करते रहें ताकि पुराने इस्लामी भाइयों की मदनी माह़ोल से वाबस्तगी पर इस्तिक़ामत और नए इस्लामी भाइयों की मदनी तरबियत का सामान होता रहे।

(24) याद रहे कि मुतअ़ल्लिक़ा रुक्ने शूरा ज़रूरतन इन मदनी फूलों में तब्दीली कर सकते हैं।

(25) ज़िम्मेदारान अपनी दुन्या और आख़िरत की बेहतरी के लिए मुन्दरजए ज़ैल उमूर को अपनाने की कोशिश फ़रमाएं :

❀ **फ़र्ज़ उ़लूम** सीखने की कोशिश करते रहें। फ़र्ज़ उ़लूम सीखने के लिए कुतुबे अमीरे अहले सुन्नत, बहारे शरीअ़त, फ़तावा रज़विय्या, एह़याउल उ़लूम वग़ैरा के मुत़ालए़ की आ़दत बनाएं। (वक़्तन फ़ वक़्तन होने वाले **फ़ैज़ाने फ़र्ज़ उ़लूम कोर्स** और हफ़्तावार इजतिमाई तौ़र पर देखे जाने वाले **मदनी मुज़ाकरे** में अव्वल ता आख़िर शिर्कत को यक़ीनी बनाइये, इस की बरकत से इल्मे दीन का ला ज़वाल ख़ज़ाना हाथ आएगा। **फ़र्ज़ उ़लूम** पर मुश्तमिल मक्तबतुल मदीना से जारी होने वाले मेमोरी कार्ड (Memory Card) के ज़रीए़ भी कसीर इल्मे दीन ह़ासिल होगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ)

www.dawateislami.net

❁ अ़मली तौ़र पर मदनी कामों में शरीक हों, रोज़ाना कम अज़ कम दो घन्टे मदनी कामों में सर्फ़ कीजिए मसलन क़ाफ़िले में सफ़र और नेक काम पर अ़मल के लिए रोज़ाना ग़ौरो फ़िक्र का ज़ेहन देने के लिए कम अज़ कम दो इस्लामी भाइयों पर इनफ़िरादी कोशिश, अ़लाक़ाई दौरा, मद्रसतुल मदीना बालिग़ान, बादे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़ा, सदाए मदीना, चौक दर्स, पाबन्दिए वक़्त के साथ अव्वल ता आख़िर हफ़्तावार और दीगर इजतिमाआ़त में शिर्कत वग़ैरा।

❁ अपने मदनी मक़्सद को पेशे नज़र रखते हुवे रोज़ाना ग़ौरो फ़िक्र करते हुवे हर माह नेक काम का रिसाला अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाएं और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिए उ़म्र भर में यकमुश्त 12 माह, हर 12 माह में 1 माह और हर माह कम अज़ कम 3 दिन जदवल के मुत़ाबिक़ क़ाफ़िले में सफ़र करते रहें।

❁ बिला नाग़ा ग़ौरो फ़िक्र करते हुवे अ़त्तार का **दोस्त**, अ़त्तार का **प्यारा**, अ़त्तार का **मन्ज़ूरे नज़र** और **महबूबे** अ़त्तार बनने की सई जारी रखिये, इस्तिक़ामत पाने के लिए कम अज़ कम 3 दिन के क़ाफ़िले में सफ़र को अपना मामूल बना लीजिए नीज़ ज़रूरी गुफ़्तगू कम लफ़्ज़ों में कुछ इशारे में और कुछ लिख कर करने की कोशिश के साथ साथ निगाहें झुका कर रखने की आ़दत बनाइये।

❁ अराकीने मजलिस, नेक अ़मल नम्बर 39 पर अ़मल करते हुवे रोज़ाना कुछ न कुछ वक़्त के लिए मदनी चैनल देखें नीज़ हफ़्तावार बराहे रास्त (Live) मदनी मुज़ाकरा देखने के साथ साथ दीगर रेकॉर्डेड (Recorded) मदनी मुज़ाकरों और मदनी चैनल के सिलसिलों को एहतिमाम के साथ देखने की मदनी इल्तिजा है।

www.dawateislami.net

❀ दौराने मदनी काम व मुलाक़ात अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए़ सिलसिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या में मुरीद / त़ालिब बनाने की कोशिश करते रहें, मुरीद / त़ालिब हो जाएं तो मजलिसे मक्तूबातो तावीज़ाते अ़त्तारिय्या से मक्तूब और शजरए क़ादिरिय्या, रज़विय्या, ज़ियाइय्या, अ़त्तारिय्या ह़ासिल करने और रोज़ाना पढ़ने की तरग़ीब भी दिलाएं।

❀ मर्कज़ी मजलिसे शूरा, काबीना और अपने शोबे के मदनी मश्वरों के मिलने वाले मदनी फूलों का ख़ुद भी मुत़ालआ़ कीजिए और मुतअ़ल्लिक़ा तमाम ज़िम्मेदारान तक बर वक़्त पहुंचाइए।

❀ मदनी काम इस्तिक़ामत के साथ करने के लिए बिल ख़ुसूस नेक अ़मल नम्बर 16 और 44 के आ़मिल बन जाएं / नेक अ़मल नम्बर 16 : क्या आज आप ने मर्कज़ी मजलिसे शूरा के उसूलों के मुत़ाबिक़ अपने निगरान की इत़ाअ़त की ? (शरीअ़त की इजाज़त होने की सूरत में शूरा की इत़ाअ़त मेरी इत़ाअ़त, शूरा की ना फ़रमानी मेरी ना फ़रमानी है। सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ) / नेक अ़मल नम्बर 44 : आज आप ने किसी मुसलमान का ऐ़ब ज़ाहिर हो जाने पर (बिला मस्लह़ते शरई) उस का ऐ़ब किसी और पर ज़ाहिर तो नहीं किया ?

मदीना : बैरूने मुल्क के ज़िम्मेदारान मुतअ़ल्लिक़ा रुक्ने शूरा के मश्वरे और इजाज़त से इन मदनी फूलों में तरमीम व इज़ाफ़ा कर सकते हैं।

मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दावते इस्लामी हिन्द)

मदनी मक़्सद : मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

मदनी मुज़ाकरों व मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मदनी मश्वरों से माख़ूज़

मजलिसे ताजिरान के मुतअ़ल्लिक़ मदनी फूल

❀ मेरे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ारे हिरा में इबादत ज़रूर की, मगर बाज़ार में तिजारत भी की और लोगों के दुख दर्द में शरीक भी हुवे।[1]

❀ बेहतरीन रिसाला जो सब को फ़ाएदा दे, हलाल तरीक़े से कमाने के 50 मदनी फूल है, सब इस का मुतालआ करें और मार्केटों, दफ़ातिर वग़ैरा में तक़्सीमे रसाइल करें।[2]

❀ शख़्सिय्यात पर इनफ़िरादी कोशिश करने वाले को दावते इस्लामी हिन्द के शोबाजात व मजालिस का तआ़रुफ़ याद होना चाहिए और उन को मदनी बहारें बताते जाएं ताकि मुलाक़ात का भरपूर फ़ाएदा हासिल हो सके।[3]

❀ ताजिरान को दावते इस्लामी हिन्द का फ़अ़्आल इस्लामी भाई बनाएं।[4]

❀ ज़िम्मेदारान, अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ शख़्सिय्यात (Dignitaries) से राबिते मज़बूत करें।[5]

❀ मजलिसे ताजिरान, मुख़्तलिफ़ मार्केटों, ग़ल्ला मन्डियों और क़ुरबानी के अय्याम में मवेशी मन्डियों में मदनी अ़तिय्यात बॉक्स रखवाए।[6]

1.....मदनी मुज़ाकरा, 27 रबीउ़ल आख़िर 1437 हि. ब मुताबिक़ 6 फ़रवरी 2016 ई.
2.....मदनी मुज़ाकरा, 4 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि. ब मुताबिक़ 24 जनवरी 2015 ई.
3.....ख़ुसूसी मदनी मुज़ाकरा, 7 मुहर्रमुल हराम 1436 हि. ब मुताबिक़ 31 अक्तूबर 2014 ई.
4.....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, यकुम ता 5 रजबुल मुरज्जब 1430 हि. ब मुताबिक़ 25 ता 29 जून 2009 ई.
5.....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 3 ता 4 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1432 हि. ब मुताबिक़ 8, 9 जनवरी 2011 ई.
6.....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 8 ता 11 ज़ी क़ादतिल हराम 1435 हि. ब मुताबिक़ 4 ता 7 सितम्बर 2014 ई.

ماخذومراجع

قرآن مجید		کلام باری تعالی	
کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
کنز الایمان	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ	صحیح مسلم	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2008ء
تفسیر الخازن	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۳۵ھ	سنن ابن ماجۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2009ء
الدر المنثور	دار الفکر بیروت ۱۴۳۲ھ	سنن ابی داود	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۸ھ
حاشیۃ العلامۃ الصاوی	قاسم بیلی کیشنز پاکستان	سنن الترمذی	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2008ء
تفسیر روح المعانی	دار احیاء التراث العربی بیروت	السنن الکبری	دار الحدیث القاھرۃ ۱۴۲۹
صراط الجنان فی تفسیر القرآن	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۸ھ	المعجم الکبیر	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2007ء
موطا امام مالک	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۳۳ھ	المستدرک علی الصحیحین	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۷ھ
مسند الامام احمد بن حنبل	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۹ھ	شعب الایمان	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۹ھ
صحیح البخاری	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۸ھ	الترغیب و الترھیب من الحدیث الشریف	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۹ھ

www.dawateislami.net

کنز العمال فی سنن الاقوال والافعال	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۴ھ	بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
عمدۃ القاری	دار الفکر بیروت 2005ء	کیمیائے سعادت	النوریہ الرضویہ پبلشنگ کمپنی پاکستان ۱۴۳۰ھ
مرقاۃ المفاتیح	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2007ء	مکاشفۃ القلوب	کوئٹہ بلوچستان
مرآۃ المناجیح	نعیمی کتب خانہ گجرات	دلائل النبوۃ	المکتبۃ العصریۃ بیروت ۱۴۳۳ھ
المحیط البرہانی فی فقہ النعمانی	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۴ھ	الخصائص الکبریٰ	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2008ء
حاشیہ شلبی مع تبیین الحقائق	مطبعۃ الکبری الامیریۃ مصر ۱۳۱۴ھ	سیرت مصطفیٰ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
البحر الرائق شرح کنز الدقائق	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۳۴ھ	الطبقات الکبری	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۳۳ھ
الدر المختار	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۳ھ	الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2010ء
رد المحتار علی الدر المختار	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۸ھ	تاریخ بغداد	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2011ء
الفتاوی الھندیۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ	تاریخ مدینہ دمشق	دار الفکر بیروت
الریاض النضرۃ فی مناقب العشرۃ	النوریہ الرضویہ پبلشنگ کمپنی پاکستان ۱۴۳۳ھ	سیر اعلام النبلاء	دار الفکر بیروت ۱۴۱۷ھ
فتاوی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن ۱۴۲۳ھ	تاریخ الاسلام	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۶ھ

الاصابة فی تمییز الصحابة	المکتبة التوفیقیہ مصر	اسلامی زندگی	مکتبة المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۲۷ھ
اسد الغابة	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۹ھ	فیضان صدیق اکبر	مکتبة المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ
الاعلام للزرکلی	دار العلم للملایین بیروت 2005ء	فیضان فاروق اعظم	مکتبة المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۶ھ
قرة العیون	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۱۶ھ	حضرت سیدنا عبد الرحمن بن عوف	مکتبة المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ
بستان الواعظین و ریاض السامعین	دار الکتاب العربی ۱۴۳۰ھ	کلیات اقبال	استقلال پریس لاہور ۱۴۱۰ھ
کتاب الکبائر	دار الثریا الریاض	ذوق نعت	مکتبة المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۹ھ
کتاب التعریفات	دار النفائس بیروت ۱۴۲۸ھ	وسائل بخشش (مرمّم)	مکتبة المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۶ھ

मौत, मोहताजी और बीमारी

सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : तुम मरने के लिये जनते हो, वीरान होने के लिये तामीर करते हो, फ़ना होने वाली (दुन्या) पर लालच करते हो और बाक़ी रहने वाली (आख़िरत) को छोड़े हुए हो, मगर तीन ना पसन्दीदा चीज़ें बहुत बेहतरीन हैं : (1) मौत (2) मोहताजी और (3) बीमारी । (الزھد لابن المبارک، باب عن النھی عن طول الامل، ص۸۸، حدیث: ۲۶۲)

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़नवान	सफ़ह	उ़नवान	सफ़ह
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	ख़िदमते दीन में किरदार	28
रज़्ज़ाक़ कौन ?	1	ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه	30
तिजारत और इस की अहम्मिय्यत	4	ख़िदमते दीन का मुन्फ़रिद अन्दाज़	31
बेहतरीन तिजारत	5	ह़ज़रते दालज رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه	32
तिजारत में पाई जाने वाली उ़मूमी ख़राबियां और इन के नुक़्सानात	6	ख़ैरो भलाई के कामों में मददगार	32
		ताजिरों की इस्लाम की ख़ातिर माली क़ुरबानियां	34
झूट और झूटी क़सम	6	कुल माल राहे ख़ुदा में क़ुरबान	34
धोकादेही	8	नफ़ीस चीज़ की क़ुरबानी	35
सूद	10	जन्नत ख़रीदने वाले	36
वादा ख़िलाफ़ी	11	ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की सख़ावत की चन्द झल्कियां	37
तिजारत की मुरव्वजा नाजाइज़ सूरतें	13		
क़िस्तों पर कारोबार	13		
नीलामी की बैअ़	15	एक हज़ार ग़ुलामों की आमदनी	38
जाली मोहर	15	ताजिर दीन की ख़िदमत कैसे कर सकता है ?	39
जाली बिल	16		
मुज़ारबत और शिराकत की नाजाइज़ सूरतें	17	मजलिसे ताजिरान (दावते इस्लामी हिन्द) के क़ियाम का मक़्सद	43
क़र्ज़ पर नफ़्अ़	19		
लकी और बोली वाली कमेटी	20	''ग़मे माल से बचाना मदनी मदीने वाले'' के 25 हुरूफ़ की निस्बत से मजलिसे ताजिरान के 25 मदनी फूल	44
लम्ह्ए फ़िक्रिय्या	21		
ताजिरों की दीनी ख़िदमात	22		
ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ عَنْه	24	मदनी मुज़ाकरों व मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मदनी मश्वरों से माख़ूज़ मजलिसे ताजिरान के मुतअ़ल्लिक़ मदनी फूल	56
ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه	25		
फ़ारूक़े आज़म और नेकी की दावत	25		
मनवाना हमारा मन्सब नहीं	27		
ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه	27	मआख़िज़ो मराजेअ़	57
		फ़ेहरिस्त	60

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिए

हर जुमेरात बाद नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतेमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिए अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइए ۞ सुन्नतों की तरबियत के लिए मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना जाइज़ा लेते हुवे नेक आमाल का रिसाला पुर कर के हर महीने की पेहली तारीख़ को अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मामूल बना लीजिए।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिए "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिए "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

MRP

DAWAT-E-ISLAMI

01012976

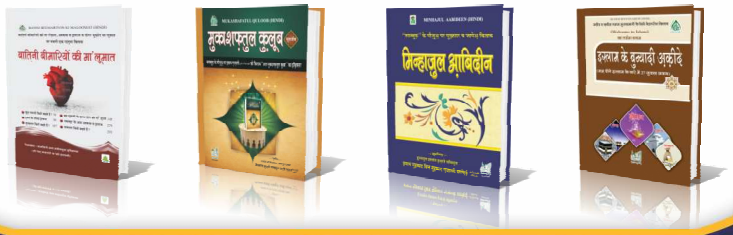

MAKTABATUL MADINA

Maktabatul Madina
Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372
Faizane Madina, Triconia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200
421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 *T&C Apply
feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net

www.dawateislami.net